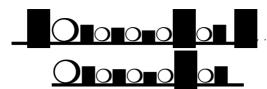


<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

তাদের রানো কতারা O MOMIN .us .72-DELUDED, DEVIATED SECTS-called SHEEAAA..... Devbandhpattan, Barreily city, Village Qadian, etc. ಮಾಮಿನುಲ್ಲು ದೆವುపంದುಲ್ಲು ಬರ್ರೆಲ್ಲಾ ಗ್ರ್ ರೈಲ್ಲಾ ಮುಸಿಲಿಮಾನುಲ್ಲಾ?

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>



Commands of Allaahu 🐫,

The Invincible The Irresistible, The

<u>Unaboidable...</u>

ألمحتوياتCONTENTS

0

0 • 0 ••

वास्तव में तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी ही सख़्त है নিঃসন্দেহে তোমার প্রভুর পাকড়ানো

His Grip is Formidable

और जिस किसी ने भी अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और अन्तिम दिन का इनकार किया,....

আत यে किउ অবিশ্বাস করে আল্লাহ্তে ও তাঁর ফিরিশ্তাগণে, ও তাঁর কিতাবসমূহে ও তাঁর রসূলগণে, ও.... whosoever disbelieves in Allah . His Angels, His Books, His Messengers, and the Last Day, then indeed he has strayed far away.

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

আর তোমাদের প্রভুর দিকে ফেরো এবং...रुजू हो अपने रब की ओर और उसके आज्ञाकारी बन जाओ....And turn in repentance and in obedience with true Faith (Islamic Monotheism) to your

अद्दीनुल इस्लाम-অদ্দীনুল ইসলাম-নিঃসন্দেহ আল্লাহ্রুর কাছে ধর্ম হচ্ছে ইসলাম। আর दीन (धर्म) तो अल्लाह की स्पष्ट में इस्लाम ही है।

AdDeen,_Alislaameen,

वही तुम्हारा संरक्षक है। तो क्या ही अच्छा संरक्षक है और क्या ही अच्छा सहायक/... कोई दो टांग वाला जानवर मौलाना/वाली कभी नहीं होसक्ता -তিনিই তোমাদের অভিভাবক, সুতরাং কত উত্তম এই অভিভাবক এবং কত উত্তম এই সাহায্যকারী/ মোনে রেখে কিছু দুপায়ের যান্বর কখুনও

No two legged Zoon:: HomoSapiens can claim divinity as

Maulaana/Waly ----- Will cost him his dear eternity, Doesn't suit

him,

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

He 🖖 is your Maula (Patron, Lord, etc.), what an Excellent Maula

(Patron, Lord, etc.) and what an Excellent Helper!

No two legged Zoon:: HomoSapiens can claim divinity as

Maulaana/Waly ---- Will cost him his dear eternity, Doesn't suit

him,

• • • • • • •

আর তোমরা সবে মিলে আল্লাহ্র রশি দৃঢ়ভাবে আঁকড়ে ধরো,
আর বিচ্ছিন্ন হয়ো না,-और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को

मज़बूती से पकड़ लो और विभेद में न पड़ो।-Fissiparous

ग्रिपिस्म_Splintering into ৩২.Sects...

और यह कि यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे मार्गों पर न चलो कि _-সঠিক _আর যে এটিই আমার সহজ পথ, কাজেই এরই অনুসরণ করো, এবং অন্যান্য পথ অনুসরণ সব তাঁর পথ থেকে তোমাদের _করো না, কেননা সে বিচ্ছিন্নকরবে। Siraatul Mustageem...

☐ ● ☐ ● ● ाহल আल्लाइ्त फल, ाताइ इत्व विकाशी।--निश्चय ही अल्लाह का गिरोह प्रभावी होकर रहेगा--
Hizbullaahi.

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

Tafreeaee प्राच्या विकास का कि त्राह्म विकास वि

শয়তান তাদের উপরে কাবু করে ফেলেছে সেজন্য সে তাদের আল্লাহ্কে স্মরণ করা ভুলিয়ে দিয়েছে। ---- - उनपर शैतान ने पूरी तरह अपना प्रभाव जमा लिया है। अतः उसने अल्लाह की याद को उनसे भुला दिया।---- Shaitan (Satan) has overtaken them. So he has made them forget the remembrance of Allah.

तुम सब इस्लाम में दाख़िल हो जाओ और शैतान के पदचिन्ह पर न चलो।____সম্পূর্ণরূপে আত্মসমর্পণে দাখিল হও, আর শয়তানের পদচিহ্ন অনুসরণ করো না ___-Enter perfectly in Islam

$\bigcirc \bullet \bigcirc \bigcirc \bullet \bullet$

-- जाता कि जत আल्लार्त धर्म ছाज़ा আत किছू খूकँ ছে? আत जात প্রতি আত্মসমর্পণ করছে যে কেউ আছে মহাকাশমন্ডলে ও পৃথিবীতে--- अब क्या इन लोगों को अल्लाह के दीन (धर्म) के सिवा किसी और दीन की तलब है, हालाँ कि---- Do they seek other than the

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

religion of Allah

আর তাঁর চাইতে কে বেশী ধর্মপরায়ণ যে আল্লাহ্র দিকে আপন মূখমন্ডল সমর্পণ করেছে আর সে সৎকর্মী, আর যে———और दीन (धर्म) की स्पष्ट से उस व्यक्ति से अच्छा कौन हो सकता है, जिसने अपने आपको अल्लाह के आगे झुका दिया और इबराहीम के तरीक़े का अनुसरण करे जो सबसे कटकर एक का हो गया था?————And who can be better in religion than one who submits his face (himself) to Allah (i.e. follows Allah's Religion of Islamic

Monotheism)

নিঃসন্দেহ আল্লাহ্ ক্ষমা করেন না তাঁর সঙ্গে শরিক করা হোক,
আর তা ছাড়া সব-কিছু তিনি ক্ষমা করেন যার জন্য তিনি
ইচ্ছে করেন---() निस्संदेह अल्लाह इस चीज़ को क्षमा नहीं करेगा
कि उसके साथ किसी को शामिल किया जाए----Shirk

_তোমাদের জন্য অবৈধ হচ্ছে __ যা নিজে মারা গেছে আর রক্ত, আর শূকরের মাংস, আর যা যবেহ্ করা হয়েছে

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

,,,,,,,,,,,,,,,

আल्लार् ছाড़ा অन्य नाप्त निर्य या ----तुम्हारे लिए हराम हुआ मुर्दार रक्त, सूअर का मांस और वह जानवर जिसपर अल्लाह

और_____-Forbidden Things

- आत आल्लार्ॐतरे राष्ट्र अवहारेख जाला नाप्तावली, कार्जरे ठाँक ----अच्छे नाम अल्लाहॐ ही के है। तो तुम उन्हीं के द्वारा उसे पुकारो----- To Allaahu. ॐ belong the Most Glorious

Names-invoke, Supplicate,

_আর আল্লাহ্ৠর বাণী __ তা হচ্ছে উচ্চতম। আর আল্লাহ্ৠ হচ্ছেন মহাশক্তিশালী, পরমজ্ঞানী।

____बोल तो अल्लाह है। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशील, तत्वदर्शी है_____

The Word of Allah (1) is the Loftiest, and Allah (1) is All-Mighty,

All-Wise

●•আর সত্যকে তোমরা মিথ্যার পোশাক পরিয়ো না বা সত্যকে গোপন কর না, অথচ তোমরা জানো।,-----और सत्य में असत्य

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

,,,,,,,,,,,,,,,

का घाल-मेल न करो और जानते-बुझते सत्य को छिपाओ

मत---Mix not Truth with Falsehood, nor Conceal the Truth__ डैंड

جمنا کا مثال مت ضرب کر

گنگا جمنا کا مثال مت ضرب کر

আর নিশ্চয়ই তাদের মধ্যের একদল গ্রন্থপাঠে তাদের জিহ্বাকে পাকিয়ে-বাঁকিয়ে তোলে যেন তোমরা ভাবতে পারো তা গ্রন্থ থেকেই অথচ তা গ্রন্থ থেকে নয়।—उनमें कुछ लोग ऐसे है जो किताब पढ़ते हुए अपनी ज़बानों का इस प्रकार उलट-फेर करते है कि तुम समझों कि वह किताब ही में से है जबिक वह किताब में से नहीं होता।——Distortion of the Book with Tongues

$\bigcirc \bullet \bullet \bigcirc \blacksquare \bullet \bullet$

■ আর যে কেউ ইসলাম পরিত্যাগ করে অন্য কোনো ধর্ম

অনুসরণ করে তা হলে তার কাছ থেকে কখনো তা কবুল করা

হবে না—— जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलब करेगा

तो उसकी ओर से कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा। जो इस्लाम के

अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलब करेगा तो उसकी ओर से कुछ

भी स्वीकार न किया जाएगा। ——— Whoever seeks a Religion other

than Islam, it will never be Accepted

///...Al-Hajj (22:78)

जिष्ण विश्व विश्

O• O••

আর যদি তোমরা ধৈর্যশীল ও ধর্মপরায়ণ হও তবে তাদের ষড়যন্ত্র তোমাদের এতটুকু ক্ষতি করবে না-यदि तुमने धैर्य से काम लिया और (अल्लाह का) डर रखा, तो----But if you Remain

Patient and Become Al-Muttaqun 🔾

Those Who Disputed as Regards the Book are far Away in Opposition.

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

WWW WWW

কিন্ত তাদের কাছে জ্ঞান আসার পরেও তারা মতভেদ করে নি নিজেদের মধ্যে ঈর্ষা বিদ্বেষ ব্যতীত।

विश्वाञ श्वाञ्चन करता बाल्लाइ ७ ठाँत तजूल, ७ किठाव या जिन नायिल करति जाँत ---अल्लाह के लिए गवाही देते हुए इनसाफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो, चाहे वह----() you who believe! Stand out firmly for justice, as witnesses to Allah

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78)

निःअत्मर याता অविश्वाञ পোষণ করে আল্লাহ্তে ও তাঁর রসূলগণে, আর যারা আল্লাহ্ ও তাঁর রসূলদের মধ্যে পার্থক্য করতে চায়, আর তারা বলে _____ जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इनकार करते है और चाहते है कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच विच्छेद करें और कहते है कि 'हम कुछ को मानते हैं ____ Those Who Differentiate Between Allah and His Messengers

यथन তোমরা শোনো আল্লাহ্র আয়াতসমূহ অবিশ্বাস করা হচ্ছে ও সেগুলোকে বিদ্রূপ করা হচ্ছে তখন তাদের সঙ্গে বসে থেকো না ☐○जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इनकार किया जा रहा है और उसका उपहास किया जा रहा है, तो ☐ Verses of Allah being denied and mocked at.

$\bigcirc \bullet \bullet \bigcirc \bullet \bullet$

Heavenly Software vs Deluded Corrupt Software.





<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

Commands of Allaahu^{ss,}
The Invincible ,The Irresistible,The
Unaboidable...

<u>○</u> ○ □ □ □ वास्तव में तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी ही सख़्त है-

নিঃসন্দেহে তোমার প্রভুর পাকড়ানো বড়ই কঠোর।-His Grip is Formidable₌்

AL-BUROOJ (85:12)

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>



إن انتقام ربك من أعدائه وعذابه لهم لعظيم شديد، إنه هو يُبدئ الخلق ثم يعيده، وهو الغفور لمن تاب، كثير المودة والمحبة لأوليائه، صاحب العرش المجيدُ الذي بلغ المنتهى في الفضل والكرم، فعال الذي بلغ المنتهى في الفضل والكرم، فعال الما يريد، لا يمتنع عليه شيء يريده

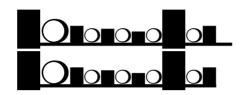
یقیناً تیرے رب کی پکڑ بڑی سخت ہے

वास्तव में तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी ही सख़्त है

নিঃসন্দেহে তোমার প্রভুর পাকড়ানো বড়ই কঠোর।

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

VERILY, (O MUHAMMAD (PEACE BE UPON HIM)) THE GRIP (PUNISHMENT) OF YOUR LORD IS SEVERE.



AD-DUKHAAN (44:16)

بس<u>اراللهم</u> بالرجيمان مالرجيمام

يَوْمَ نَبْطِشُ ٱلبَطْشَةَ ٱلكُبْرَى إِتَا مُنتَقِمُونَ

يوم نعذب جميع الكفار العذاب الأكبر يوم القيامة وهو يوم انتقامنا منهم.

جس دن ہم بڑی سخت پکڑ پکڑیں گے، ب الیقین ہم بدلہ لینے والے ہیں

याद रखो, जिस दिन हम बड़ी पकड़ पकड़ेंगे,

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

तो निश्चय ही हम बदला लेकर रहेंगे

যেদিন আমরা পাকড়াবো বিরাট ধড়পাকড়ে, সেদিন আমরা নিশ্চয়ই শেষ-পরিণতি দেখাব।

ON THE DAY WHEN WE SHALL SEIZE YOU WITH THE GREATEST GRASP. VERILY, WE WILL EXACT RETRIBUTION.

□□□□□□□□□□और जिस किसी ने भी
अल्लाहॐ और उसके फ़रिश्तों और
उसकी किताबों और उसके रसूलों और
अन्तिम दिन का इनकार किया,....

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

আর যে কেউ অবিশ্বাস করে

আল্লাহ্তে ও তাঁর ফিরিশ্তাগণে, ও

তাঁর কিতাবসমূহে ও তাঁর রসূলগণে,

3...._whosoever disbelieves in Allah His Angels, His Books, His Messengers, and the Last Day, then indeed he has

strayed far away.



An-Nisaa (4:136) بسيالله الاجمهان

يَّأَيُّهَا ٱلذِينَ ءَامَنُوا ءَامِنُوا بِٱللهِ وَرَسُولِهِ۔ وَٱلْكِتَٰبِ ٱلَّذِي تَرُّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِ۔ وَٱلْكِتَٰبِ ٱلذِي أَنْزَلَ مِن قَبْلُ وَمَن يَكَفُرْ بِٱللهِ وَمَلَئِكَتِهِ۔ وَكْتُبِهِ۔ وَرُسُلِهِ۔ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِر فقد ضَل ضَللًا بَعِيدًا

///...Al-Hajj (22:78)

اس کے رسول ، الله تعالیٰ پر/اے ایمان والو پر اور اس کتاب پر جو (صلی الله علیہ وسلم) پر (صلی الله علیہ وسلم) اس نے اپنے رسول اتاری ہے اور ان کتابوں پر جو اس سے پہلے جو شخص / ایمان لاؤ،اس نے نازل فرمائی ہیں الله تعالیٰ سے اور اس کے فرشتوں سے اور اس کی کتابوں سے اور اس کے رسولوں سے اور قیامت کے دن سے کفر کرے وہ تو بہت بڑی دور قیامت کے دن سے کفر کرے وہ تو بہت بڑی دور کی گمراہی میں جا پڑا

O you who believe! Believe in Allah . and His Messenger (Muhammad SAW), and the Book (the Quran) which He has sent down to His Messenger, and the Scripture which He sent down to those before (him), and whosoever disbelieves in Allah . His Angels, His Books, His Messengers, and the Last Day, then indeed he has strayed far away.

///...Al-Hajj (22:78)

ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह∰ पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उस किताब पर भी, जिसको वह इसके पहले उतार चुका है। और जिस किसी ने भी अल्लाह∰ और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और अन्तिम दिन का इनकार किया, तो वह भटककर बहुत दूर जा पड़ा ता-Nisaa (६:١٣٦)

ওহে যারা ঈমান এনেছ/ বিশ্বাস স্থাপন করো আল্লাহ্তে ও তাঁর রসূলে, ও কিতাবে যা তিনি নাযিল করেছেন তাঁর রসূলের কাছে, আর যে গ্রন্থ তিনি অবতারণ করেছিলেন এর আগে। আর যে কেউ অবিশ্বাস করে আল্লাহ্তে ও তাঁর ফিরিশ্তাগণে, ও তাঁর কিতাবসমূহে, ও তাঁর রসূলগণে, ও আখেরাতের দিনে, — সে তাহলে নিশ্চয়ই চলে গেছে সুদূর

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78)

বিপথে।

আর তোমাদের
প্রভুর ্জ দিকে ফেরো এবং.... रुजू हो
अपने रब को ओर और उसके
आज्ञाकारी बन जाओ....And turn in
repentance and in obedience with true
Faith (Islamic Monotheism) to your
Lord, আজি and submit to Him,

جيرة عن المنطقة (39:54) المنطقة المنط

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

يَأْتِيكُمُ ٱلعَدَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ

اپنے پروردگار کی طرف جھک (سب) تم پڑو اور اس کی حکم برداری کیے جاؤ اس سے قبل کہ تمہارے پاس عذاب آ جائے اور پھر تمہاری مدد نہ کی جائے

"And turn in repentance and in obedience with true Faith (Islamic Monotheism) to your Lord, and submit to Him, (in Islam), before the torment comes upon you, then you will not be helped.

रुजू हो अपने रब कि की ओर और उसके आज्ञाकारी बन जाओ, इससे पहले कि तुमपर यातना आ जाए। फिर तुम्हारी सहायता न की जाएगी

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

<u>'আর তোমাদের প্রভুর</u> <u>দিকে ফেরো</u> এবং তোমাদের উপরে শাস্তি আসার আগেভাগে তাঁর প্রতি পূর্ণ আত্মসমর্পণ করো, তখন আর তোমাদের সাহায্য করা হবে না।

ा तिः जत्मर आल्लार्ॐ त

काष्ट्र धर्म रुष्ट्र रेजलाम। आतदीन (धर्म) तो अल्लार्ॐ की स्पष्ट में
इस्लामहीहै।AdDeen,_ Al-islaam
□

Aal-i-Imraan (3:19)

إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللهِ ٱلْإِسْلَمُ وَمَا ٱخْتَلَفَ ٱلذِينَ أُوتُوا ٱلْكِتَٰبَ إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ ٱلعِلْمُ بَغْيًّا بَيْنَهُمْ وَمَن يَكُفُرْ بِأَيْتِ ٱللهِ فَإِنَّ ٱللهَ سَرِيعُ ٱلحِسَابِ

///...Al-Hajj (22:78)

یے شک الله تعالیٰ کے نزدیک دین اسلام اور اہل کتاب نے اپنے پاس علم ،ہی ہے آجانے کے بعد آپس کی سرکشی اور حسد کی بنا پر ہی اختلاف کیا ہے اور الله تعالیٰ کی آیتوں کے ساتھ جو بھی کفر کرے الله تعالیٰ اس کا جلد حساب لینے والا ہے والا ہے

Truly, the religion with Allah is Islam.

Those who were given the Scripture (Jews and Christians) did not differ except, out of mutual jealousy, after knowledge had come to them. And whoever disbelieves in the Ayat (proofs, evidences, verses, signs, revelations, etc.) of Allah is Swift in calling to account.

दीन (धर्म) तो अल्लाह की स्पष्ट में इस्लाम ही है। जिन्हें किताब दी गई थी, उन्होंने तो इसमें

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

इसके पश्चात विभेद किया कि ज्ञान उनके पास आ चुका था। ऐसा उन्होंने परस्पर दुराग्रह के कारण किया। जो अल्लाह की आयतों का इनकार करेगा तो अल्लाह भी जल्द हिसाब लेनेवाला है

নিঃসন্দেহ আল্লাহ্ বি কাছে ধর্ম হচ্ছে ইসলাম। আর যাদের কিতাব দেয়া হয়েছিল তারা মতভেদ করে নি, শুধু তারা ব্যতীত যাদের কাছে জ্ঞানের বিষয় আসার পরেও নিজেদের মধ্যে ঈর্ষাবিদ্বেষ করেছিল, আর যে কেউ আল্লাহ্ করে নির্দেশের প্রতি অবিশ্বাস পোষণ করে — নিঃসন্দেহ আল্লাহ্

□ वही तुम्हारा संरक्षक है।

तो क्या ही अच्छा संरक्षक है और क्या

ही अच्छा सहायक/... कोई दो टांग

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

वाला जानवर मौलाना/वाली कभी नहीं होसक्ता - जिनिरे जाताप्तत অভিভাবক, সুতরাং কত উত্তম এই অভিভাবক এবং কত উত্তম এই সাহায্যকারী/ মোনে রেখে কিছু দুপায়ের যান্বর কখুনও No two legged Zoon:: HomoSapiens can claim divinity as Maulaana/Waly ----Will cost him his dear eternity,

<u>Doesn't suit him,</u>

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

He is your Maula (Patron, Lord, etc.),
what an Excellent Maula (Patron, Lord,
etc.) and what an Excellent Helper!

No two legged Zoon:: HomoSapiens can
claim divinity as Maulaana/Waly ----Will cost him his dear eternity,

<u>Doesn't suit him,</u>



Al-Hajj (22:78) بسرالله م

وَجَهِدُوا فِي اللهِ حَقِّ جِهَادِهِ مُوَ اَجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ مِّلةً أَبِيكُمْ الْمُسْلِمِينَ مِن فَرَا الْمُسْلِمِينَ مِن فَبْلُ وَفِي هَٰذَا لِيَكُونَ الرّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَيْ النّاسِ فَأَقِيمُوا الصّلوة وَتَكُونُوا شُهَدَاءً عَلَى النّاسِ فَأَقِيمُوا الصّلوة

وَءَاتُوا ٱلرُّكُواةَ وَٱعْتَصِمُوا بِٱللهِ هُوَ مَوْلَىكُمْ فَاتُوا ٱلرَّكُولَةِ وَأَعْتَصِمُوا بِٱللهِ هُوَ مَوْلَىكُمْ فَعَمَ ٱلنَّصِيرُ

اور الله کی راہ میں ویسا ہی جہاد کرو جیسا جہاد کا حق ہے۔ اسی نے تمہیں برگزیدہ بنایا ہے اور تم پر دین کے بارے دین اپنے باپ ،میں کوئی تنگی نہیں ڈالی اسی ، کا قائم رکھو(علیہ السلام) ابراہیم الله نے تمہارا نام مسلمان رکھا ہے۔ اس قرآن سے پہلے اور اس میں بھی تاکہ پیغمبر تم پر گواہ ہو جائے اور تم تمام لوگوں کے گواہ بن جاؤ۔ پس تمہیں چاہئے کہ نمازیں قائم رکھو اور زکو'ۃ ادا ،کرتے رہو اور الله کو مضبوط تھام لو وہی تمہارا ولی اور مالک ہے۔ پس کیا ہی اچھا مالک ہے اور کتنا ہی بہتر مددگار

ہے

And strive hard in Allah 's Cause as you ought

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

to strive (with sincerity and with all your efforts that His Name should be superior). He has chosen you (to convey His Message of Islamic Monotheism to mankind by inviting them to His religion, Islam), and has not laid upon you in religion any hardship, it is the religion of your father Ibrahim (Abraham) (Islamic Monotheism). It is He (Allah) Who has named you Muslims both before and in this (the Quran), that the Messenger (Muhammad SAW) may be a witness over you and you be witnesses over mankind! So perform As-Salat (Igamat-as-Salat), give Zakat and hold fast to Allah Li.e. have confidence in Allah, and depend upon Him in all your affairs] He is your Maula (Patron, Lord, etc.), what an Excellent Maula (Patron, Lord, etc.) and what an Excellent Helper!

No two legged Zoon:: HomoSapiens can claim divinity as Maulaana/Waly ----- Will cost him his dear eternity , Doesn't suit him.

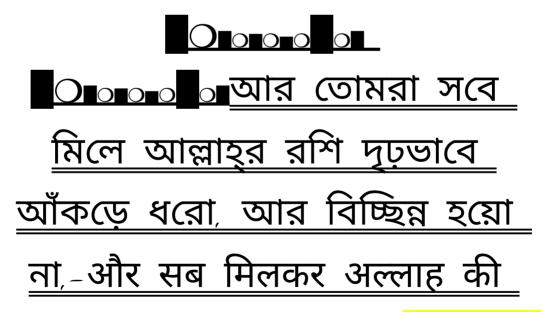
<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

और परस्पर मिलकर जिहाद करो अल्लाह के मार्ग में, जैसा कि जिहाद का हक़ है। उसने तुम्हें चुन लिया है - और धर्म के मामले में तुमपर कोई तंगी और किठनाई नहीं रखी। तुम्हारे बाप इबराहीम के पंथ को तुम्हारे लिए पसन्द किया। उसने इससे पहले तुम्हारा नाम मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा था और इस ध्येय से - तािक रसूल तुमपर गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह हो। अतः अस्सला नमाज़ का आयोजन करो और ज़कात दो और अल्लाह को मज़बूती से पकड़े रहो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो क्या ही अच्छा संरक्षक है और क्या ही अच्छा सहायक!... कोई दो टांग वाला जानवर मौलाना/वाली कभी नहीं होसका

আর আল্লাহ্ র পথে জিহাদ করো যেভাবে তাঁর পথে জিহাদ করা কর্তব্য। তিনি তোমাদের মনোনীত করেছেন, তবে তিনি তোমাদের উপরে ধর্মের ব্যাপারে কোনো

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

কাঠিন্য আরোপ করেন নি। তোমাদের পিতৃপুরুষ ইব্রাহীমের ধর্মমত। তিনি তোমাদের নামকরণ করেছেন মুসলিম; — এর আগেই আর এতেও, যেন এই রসূল তোমাদের জন্য একজন সাক্ষী হতে পারেন এবং তোমরাও জনগণের জন্য সাক্ষী হতে পার। অতএব তোমরা অসসলাহ কায়েম করবে ও যাকাত আদায় করবে এবং আল্লাহ্ কিব শক্ত করে ধরে থাকবে। তিনিই তোমাদের অভিভাবক, সুতরাং কত উত্তম এই অভিভাবক এবং কত উত্তম এই সাহায্যকারী! মানে রেখে কিছু দুপায়ের যাঘর কথুনও মৌলানা প্রাণিব বত্তে পারছিনা

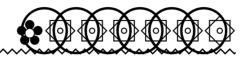


<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

WWW WWW

रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और विभेद में न पड़ो।-Fissiparous

ग्रुपिस्म_Splintering into ७२.Sects...



Aal-i-Imraan (3:103)

وَأَدْكُرُوا ْ نِعْمَتَ ٱللّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنتُمْ أَعْدَاءً وَأَدْكُرُوا ْ نِعْمَتِ ٱللّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنتُمْ أَعْدَاءً فَأَلْفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُم بِنِعْمَتِهِ ٓ إِخْوْتًا وَكُنتُمْ عَلَى شَفَا حُقْرَةٍ مِّنَ ٱلنّارِ فَأَنقَدُكُم مِنْهَا كَذَلِكَ يُبَيِّنُ ٱللّهُ لَكُمْ ءَايْتِهِ لِعَلَكُمْ تَهْتَدُونَ

الله تعالیٰ کی رسی کو سب مل کر مضبوط تھام لو اور پھوٹ نہ ڈالو، اور الله تعالیٰ کی اس وقت کی نعمت کو

///...Al-Hajj (22:78)

یاد کرو جب تم ایک دوسرے کے دشمن تھے، تو اس نے تمہارے دلوں میں الفت ڈال دی، پس تم اس کی مہربانی سے بھائی بھائی ہوگئے، اور تم آگ کے گڑھے کے کنارے پہنچ چکے تھے تو اس نے تمہیں بچا لیا۔ الله تعالیٰ اسی طرح تمہارے لئے اپنی نشانیاں بیان کرتا ہے تاکہ تم ہدایت پاؤ

،وتمسّكوا جميعًا بكتاب ربكم وهدي نبيكم ولا تفعلوا ما يؤدي إلى فرقتكم واذكروا نعمة جليلة أنعم الله بها عليكم إذ كنتم أيها المؤمنون قبل الإسلام أعداء، فجمع الله قلوبكم على محبته ومحبة رسوله ،وألقى في قلوبكم محبة بعضكم لبعض فأصبحتم بفضله إخوانا متحابين، وكنتم على حافة نار جهنم، فهداكم الله بالإسلام

ونجّاكم من النار وكما بيّن الله لكم معالم الإيمان الصحيح فكذلك يبيّن لكم كل ما ،فيه صلاحكم؛ لتهتدوا إلى سبيل الرشاد وتسلكوها، فلا تضلوا عنها

<u>আর তোমরা সবে মিলে আল্লাহ্র রশি</u>
<u>দৃঢ়ভাবে আঁকড়ে ধরো, আর বিচ্ছিন্ন হয়ো</u>
<u>না,</u> আর স্মরণ করো তোমাদের উপরে আল্লাহ্র
অনুগ্রহ -- যথা তোমরা ছিলে পরস্পর শক্র,
তারপর তিনি তোমাদের হৃদয়ে সম্প্রীতি ঘটালেন,
কাজেই তাঁর অনুগ্রহে তোমরা হলে ভাই-ভাই। আর
তোমরা ছিলে এক আগুনের গর্তের কিনারে,
তারপর তিনি তোমাদের তা থেকে বাঁচালেন।
এইভাবে আল্লাহ্ তোমাদের জন্য তাঁর নির্দেশাবলী
সুস্পষ্ট করেন যেন তোমরা পথের দিশা পাও।

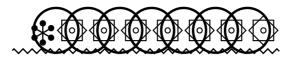
And hold fast, all of you together, to the Rope of Allah (i.e. this Quran), and be not divided among

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

your selves, and remember Allah's Favour on you, for you were enemies one to another but He joined your hearts together, so that, by His Grace, you became brethren (in Islamic Faith), and you were on the brink of a pit of Fire, and He saved you from it. Thus Allah makes His Ayat (proofs, evidences, verses, lessons, signs, revelations, etc.,) clear to you, that you may be guided.

और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और विभेद में न पड़ो। और अल्लाह की उस कृपा को याद करो जो तुमपर हुई। जब तुम आपस में एक-दूसरे के शत्रु थे तो उसने तुम्हारे दिलों को परस्पर जोड़ दिया और तुम उसकी कृपा से भाई-भाई बन गए। तुम आग के एक गड्ढे के किनारे खड़े थे, तो अल्लाह ने उससे तुम्हें बचा लिया। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयते खोल-खोलकर बयान करता है, तािक तुम मार्ग पा लो

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>



Ash-Shura (42:13)

شَرَعَ لَكُم مِنَ ٱلدِّينِ مَا وَصِّيْنَا بِهِ تُوحًا وَالذِّي أَوْحَيْنَا بِهِ آلِيْكَ وَمَا وَصِيْنَا بِهِ آلِيْرُهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إلَيْهِ اللهُ يَجْتَبِى آلِيْهِ مَن يَشَآءُ وَيَهْدِى إلَيْهِ مَن يَشِاءً

الله تعالیٰ نے تمہارے لیے وہی دین مقرر کردیا ہے جس کے قائم کرنے کا اس نے نوح (علیہ السلام) کو حکم دیا تھا اور جو (بذریعہ وحی) ہم نے تیری طرف بھیج دی ہے، اور جس کا تاکیدی حکم ہم نے ابراہیم اور موسیٰ اور عیسیٰ ہم نے ابراہیم اور موسیٰ اور عیسیٰ

///...Al-Hajj (22:78)

(علیہم السلام) کو دیا تھا، کہ اس دین کو قائم رکھنا اور اس میں پھوٹ نہ ڈ النا جس چیز کی طرف آپ انہیں بلا رہے ہیں وہ تو (ان) مشرکین پر گراں گزرتی ہے، الله تعالیٰ جسے چاہتا ہے اپنا برگزیدہ بناتا ہے اور جو بھی اس کی طرف رجوع کرے وہ اس کی صحیح رہ نمائی کرتا ہے

شرع الله لكم أيها الناس من الدّين الذي أوحيناه إليك أيها الرسول، وهو الإسلام ما وصّى به نوحًا أن يعمله ويبلغه وما وصينا به إبراهيم وموسى وعيسى (هؤلاء الخمسة هم أولو العزم من الرسل على المشهور) أن أقيموا الدين بالتوحيد

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

وطاعة الله وعبادته دون من سواه، ولا تختلفوا في الدين الذي أمرتكم به، عَظُمَ على المشركين ما تدعوهم إليه من توحيد الله وإخلاص العبادة له، الله يصطفي للتوحيد من يشاء من خلقه، ويوفّق للعمل بطاعته من يرجع إليه

তিনি তোমাদের জন্য সেই ধর্ম থেকে বিধান দিচ্ছেন যার দ্বারা তিনি নূহকে নির্দেশ দিয়েছিলেন, আর যা আমরা তোমার কাছে প্রত্যাদেশ করছি আর যার দ্বারা আমরা ইব্রাহীমকে ও মূসাকে ও ঈসাকে নির্দেশ দিয়েছিলাম এই বলে — "ধর্মকে কায়েম করো, আর এতে একে—অন্যে বিচ্ছিন্ন হয়ো না।" মুশরিকদের জন্য এ বড় কঠিন ব্যাপার যার প্রতি তুমি তাদের আহ্বান করছ/ আল্লাহ্ যাকে ইচ্ছা করেন তাকে তাঁর কারণে নির্বাচিত করেন, আর তাঁর দিকে পরিচালিত করেন তাকে যে ফেরে।

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

He (Allah) has ordained for you the same religion (Islam) which He ordained for Nuh (Noah), and that which We have inspired in you (O Muhammad SAW), and that which We ordained for Ibrahim (Abraham), Musa (Moses) and Tesa (Jesus) saying you should establish religion (i.e. to do what it orders you to do practically), and make no divisions in it (religion) (i.e. various sects in religion). Intolerable for the Mushrikun, is that to which you (O Muhammad SAW) call them. Allah chooses for Himself whom He wills, and guides unto Himself who turns to Him in repentance and in obedience.

उसने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित किया जिसकी ताकीद उसने नूह को की थी। अौर वह (जीवन्त आदेश) जिसकी प्रकाशना हमने तुम्हारी ओर की है और वह जिसकी ताकीद हमने इबराहीम और मूसा और ईसा को की थी यह है कि धर्म को क़ायम करो और उसके

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

विषय में अलग-अलग न हो जाओ।" बहुदेववादियों को वह चीज़ बहुत अप्रिय है, जिसकी ओर तुम उन्हें बुलाते हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपनी ओर छाँट लेता है और अपनी ओर का मार्ग उसी को दिखाता है जो उसकी ओर रुजू करता है



Ash-Shura (42:14)

وَمَا تَفَرَقُوٓا إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاۤءَهُمُ ٱلعِلْمُ بَعْيًا بَيْنَهُمْ وَلَوْلًا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَبِّكَ إِلَى أَجَلِ مُسَمَّى لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّ ٱلذِينَ أُورِثُوا أَلْكِتَٰبَ مِن بَعْدِهِمْ لَفِى شَكَّ مِنْهُ مُرِيبٍ

ان لوگوں نے اپنے پاس علم آجانے کے بعد ہی اختلاف کیا (اور وہ بھی) باہمی

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

ضد بحث سے اور اگر آپ کے رب کی بات ایک وقت مقرر تک کے لیے پہلے ہی سے قرار پا گئی ہوئی نہ ہوتی تو یقینا ان کا فیصلہ ہوچکا ہوتا اور جن لوگوں کو ان کے بعد کتاب دی گئی ہے وہ بھی اس کی طرف سے الجھن والے شک میں پڑے ہوئے ہیں

وما تفرق المشركون بالله في أديانهم فصاروا شيعًا وأحزابًا إلا من بعد ما جاءهم العلم وقامت الحجة عليهم، وما حملهم على ذلك إلا البغي والعناد، ولولا كلمة سبقت من ربك _أيها الرسول_ بتأخير العذاب عنهم إلى أجل مسمى وهو يوم القيامة، لقضي بينهم بتعجيل عذاب يوم القيامة، لقضي بينهم بتعجيل عذاب الكافرين منهم وإن الذين أورثوا التوراة و الإنجيل من بعد هؤلاء المختلفين في

///...Al-Hajj (22:78)

الحق لفي شك من الدين والإيمان موقع في الريبة والاختلاف المذموم

আর তারা নিজেদের কাছে জ্ঞান আসার পরেও বিচ্ছিন্ন হয়ে যেত না যদি-না নিজেদের মধ্যে সর্ষা-বিদ্বেষ থাকত। আর যদি তোমার প্রভুর কাছ থেকে একটি নির্ধারিত কাল পর্যন্ত একটি বাণী ইতিপূর্বে ধার্য হয়ে না থাকত তাহলে নিশ্চয়ই তাদের মধ্যে হেস্তনেস্ত হয়ে যেত। আর তাঁদের পরে যারা ধর্মগ্রন্থ উত্তরাধিকার করেছিল তারা তো এটি সন্বন্ধে বিভ্রান্তিকর সন্দেহে রয়েছে।

And they divided not till after knowledge had come to them, through selfish transgression between themselves. And had it not been for a Word that went forth before from your Lord for an appointed term, the matter would have been settled between them. And verily, those who were made to inherit the

///...Al-Hajj (22:78)

Scripture [i.e. the Taurah (Torah) and the Injeel (Gospel)] after them (i.e. Jews and Christians) are in grave doubt concerning it (i.e. Allah's true religion Islam or the Quran).

उन्होंने तो परस्पर एक-दूसरे पर ज़्यादती करने के उद्देश्य से इसके पश्चात विभेद किया कि उनके पास ज्ञान आ चुका था। और यदि तुम्हारे रब की ओर से एक नियत अवधि तक के लिए बात पहले निश्चित न हो चुकी होती तो उनके बीच फ़ैसला चुका दिया गया होता। किन्तु जो लोग उनके पश्चात किताब के वारिस हुए वे उसकी ओर से एक उलझन में डाल देनेवाले संदेह में पड़े हुए है



और यह कि यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे मार्गों

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

<u>पर न चलो कि --আর যে এটিই</u>
<u>সঠিক পথ, কাজেই -আমার সহজ</u>
<u>এরই অনুসরণ করো, এবং অন্যান্য</u>
<u>পথ অনুসরণ করো না, কেননা</u>
<u>সব তাঁর পথ থেকে তোমাদের -সে</u>
বিচ্ছিন্নকরবে।,SiraatulMustageem...

Al-An'aam (6:153)

وَأَنَّ هَٰذَا صِرَطِى مُسَنَّتَقِيمًا فَٱتَبِعُوهُ وَلَا تَتَبِعُوا ٱلسُبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَن سَبِيلِهِۦ دَّلِكُمْ وَصَلِّكُم بِهِۦ لَعَلَّكُمْ تَتَقُونَ

اور یہ کہ یہ دین میرا راستہ ہے جو مستقیم ہے سو اس راہ پر چلو اور دوسری راہوں پر مت چلو کہ وہ راہیں تم کو الله کی راہ سے جدا کردیں گی۔

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

اس کا تم کو الله تعالیٰ نے تاکیدی حکم دیا ہے تاکہ تم پرہیزگاری اختیار کرو

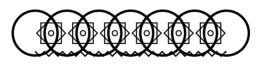
ومما وصاكم الله به أن هذا الإسلام هو طريق الله تعالى المستقيم فاسلكوه، ولا تسلكوا سبل الضلال، فتفرقكم، وتبعدكم عن سبيل الله المستقيم. ذلكم التوجه نحو الطريق المستقيم هو الذي وصاكم الله به؛ لتتقوا عذابه بفعل أوامره، واجتناب نواهيه

সঠিক পথ, - আর যে এটিই আমার সহজ কাজেই এরই অনুসরণ করো, এবং অন্যান্য পথ অনুসরণ করো না, কেননা সব তাঁর পথ থেকে তোমাদের বিচ্ছিন্ন -সে করবে।" এইসব দ্বারা তিনি তোমাদের নির্দেশ দিয়েছেন যেন তোমরা ধর্মপরায়ণতা অবলম্বন করো।

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

"And verily, this (i.e. Allah's Commandments mentioned in the above two Verses 151 and 152) is my Straight Path, so follow it, and follow not (other) paths, for they will separate you away from His Path. This He has ordained for you that you may become see V. 2:2)."-Muttaqun (the pious -Al

और यह कि यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे मार्गों पर न चलो कि वे तुम्हें उसके मार्ग से हटाकर इधर-उधर कर देंगे। यह वह बात है जिसकी उसने तुम्हें ताकीद की है, ताकि तुम (पथभ्रष्ट ता से) बचो



Yusuf (12:39)

يْصَلَحِبَى ٱلسِّجْنِ ءَأَرْبَابٌ مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ ٱللهُ ٱلوَّحِدُ ٱلقَهَّارُ

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

اے میرے قید خانے کے ساتھیو/ کیا متفرق کئی ایک پروردگار بہتر ہیں؟ یا ایک الله زبردست طاقتور؟

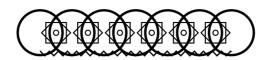
وقال يوسف للفتّيين اللذين معه في السجن: أعبادةُ آلهةٍ مخلوقة شتى خير أم عبادة الله الواحد القهار؟

হৈ আমার জেলখানার সঙ্গিদ্বয়/ ভিন্ন ভিন্ন প্রভুসব ভাল, না একক সর্বশক্তিমান আল্লাহ্?

"O two companions of the prison! Are many different lords (gods) better or Allah, the One, the Irresistible?

ऐ कारागर के मेरे साथियों/ क्या अलग-अलग बहुत-से रह अच्छे है या अकेला अल्लाह जिसका प्रभुत्व सबपर

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>



Yusuf (12:40)

مَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِهِۦٓ ۚ إِلّٰۤ أَسْمَاءً سَمَيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَءَابَآ وُكُمْ مَا أَنزَلَ أَللهُ بِهَا مِن سُلطنِ إِن الْحُكُمُ إِلَّا لِلهِ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوۤا إِلَّا إِيَّاهُ لَا تَعْبُدُوۤا اللّٰهِ اللّٰهِ أَمْرَ أَلَّا تَعْبُدُوۤا إِلَّا إِيَّاهُ لَا يَعْبُدُوا اللّٰهِ لَا يَعْلُمُونَ النَّاسِ لَا يَعْلُمُونَ

اس کے سوا تم جن کی پوجا پاٹ کر رہے ہو وہ سب نام ہی نام ہیں جو تم نے اور تمہارے باپ دادوں نے خود ہی گھڑ لئے ہیں۔ الله تعالیٰ نے ان کی کوئی دلیل نازل نہیں فرمائی، فرمانروائی صرف الله تعالیٰ ہی کی ہے، اس کا فرمان ہے الله تعالیٰ ہی کی ہے، اس کا فرمان ہے

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

کہ تم سب سوائے اس کے کسی اور کی عبادت نہ کرو، یہی دین درست ہے لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے

ما تعبدون من دون الله إلا أسماءً لا معاني وراءها، جعلتموها أنتم وآباؤكم أربابًا جهلا منكم وضلالا، ما أنزل الله من حجة أو برهان على صحتها، ما الحكم الحق إلا لله تعالى وحده، لا شريك له أمر ألا تنقادوا ولا تخضعوا لغيره، وأن تعبدوه وحده، وهذا هو الدين القيم الذي تعبدوه فيه، ولكن أكثر الناس يجهلون فيه، ولكن أكثر الناس يجهلون فلا يعلمون حقيقته

তাঁকে ছেড়ে দিয়ে তোমরা যাদের উপাসনা কর তারা নামাবলী মাত্র যা তোমরা নামকরণ করেছ তোমরা ও তোমাদের পূর্বপুরুষরা, যেজন্যে --দস্তাবেজ আল্লাহ্ পাঠান নি। বিধান -কোনো দলিল

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

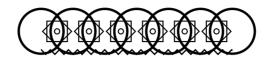
দেবার অধিকার শুধু আল্লাহ্র। তিনি আদেশ দিয়েছেন যে তোমরা তাঁকে ছাড়া আর কারোর উপাসনা করবে না। এই হচ্ছে সঠিক ধর্ম, কিন্তু অধিকাংশ লোকেই জানে না।

"You do not worship besides Him but only names which you have named (forged), you and your fathers, for which Allah has sent down no authority. The command (or the judgement) is for none but Allah. He has commanded that you worship none but Him (i.e. His Monotheism), that is the (true) straight religion, but most men know not.

तुम उसके सिवा जिनकी भी बन्दगी करते हो वे तो बस निरे नाम हैं जो तुमने रख छोड़े है और तुम्हारे बाप-दादा ने। उनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा। सत्ता और अधिकार तो बस अल्लाह का है। उसने आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

न करो। यही सीधा, सच्चा दीन (धर्म) हैं, किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते



Tafreeq.

Aal-i-Imraan (3:105)

بس<u>االلهم</u> الرحيمن مالرجيم

وَلَا تَكُونُواْ كَٱلَّذِينَ تَفَرَقُواْ وَٱخْتَلَقُواْ مِنَ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ ٱلْبَيِّنَتُ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

تم ان لوگوں کی طرح نہ ہو جانا جنہوں
نے اپنے پاس روشن دلیلیں آ جانے کے
، اور اختلاف کیا،بعد بھی تفرقہ ڈالا
انہیں لوگوں کے لئے بڑا عذاب ہے

كأهل الكتاب أيها المؤمنون_ ولا تكونوا_

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

الذين وقعت بينهم العداوة والبغضاء واختلفوا في أصول ،فتفرّقوا شيعًا وأحزابًا وأولئك ،دينهم من بعد أن اتضح لهم الحق مستحقون لعذابٍ عظيم موجع

আর তাদের মতো হয়ো না যারা বিচ্ছিন্ন হয়েছিল আর মতভেদ করেছিল তাদের কাছে সুস্পষ্ট নির্দেশাবলী আসার পরেও। আর এরা -- এদের জন্য আছে কঠোর যন্ত্রণা, --

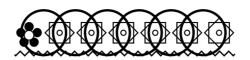
And be not as those who divided and differed among themselves after the clear proofs had come to them.

It is they for whom there is an awful torment.

तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जो विभेद में पड़ गए, और इसके पश्चात कि उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकी थी, वे विभेद में पड़ गए। ये वही लोग है, जिनके लिए बड़ी (घोर) यातना है। (यह यातना उस

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

दिन होगी)



Al-Bayyina (98:4)

وَمَا تَقَرَّقَ ٱلذِينَ أُوتُوا ۖ ٱلْكِتَٰبَ إِلَّا مِن ٰ بَعْدِ ﴿ مُنَا لِنَوْنَ الْذِينَ أُوتُوا ۖ ٱلْكِتَٰبَ إِلَّا مِن ٰ بَعْدِ

مَا جَآءَتُهُمُ ٱلْبَيِّنَةُ

اہل کتاب اپنے پاس ظاہر دلیل آجانے کے بعد ہی (اختلاف میں پڑ کر) متفرق ہوگئے

وما اختلف الذين أوتوا الكتاب من اليهود والنصارى في كون محمد صلى الله عليه وسلم رسولا حقًا؛ لما يجدونه من نعته

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

في كتابهم، إلا من بعد ما تبينوا أنه النبي ،الذي وُعِدوا به في التوراة والإنجيل: فكانوا مجتمعين على صحة نبوته، فلما بُعِث جحدوها وتفرّقوا

আর যাদের গ্রন্থখানা দেওয়া হয়েছিল তারা বিভক্ত হয় নি যতক্ষণ না তাদের কাছে সুস্পষ্ট প্রমাণ এসেছিল।

And the people of the Scripture (Jews and Christians) differed not until after there came to them clear evidence. (i.e. Prophet Muhammad (Peace be upon him) and whatever was revealed to him).

हालाँकि जिन्हें किताब दी गई थी। वे इसके पश्चात फूट में पड़े कि उनके पास स्पष्ट प्रमाण आ चुका था

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

Al-Bayyina (98:5) بسراللهم

وَمَاۤ أُمِرُوٓا ۚ إِلَّا لِيَعْبُدُوا ۚ اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَآءَ وَيُقِيمُوا الصّلواة وَيُؤْثُوا الرّكواة وَدَلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ

انہیں اس کے سوا کوئی حکم نہیں دیا گیا کہ صرف الله کی عبادت کریں اسی کے لئے دین کو خالص رکھیں۔ ابراہیم حنیف کے دین پر اور نماز کو قائم رکھیں اور زکو'ۃ دیتے رہیں یہی ہے دین سیدھی ملت کا

وما أمروا في سائر الشرائع إلا ليعبدوا الله وحده قاصدين بعبادتهم وجهه، مائلين عن الشرك إلى الإيمان، ويقيموا الصلاة، ويُؤدُوا الزكاة، وذلك هو دين الاستقامة ، وهو الإسلام.

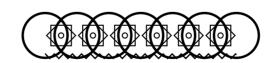
আর তাদের আদেশ করা হয় নি এ ভিন্ন যে তারা আল্লাহ্র উপাসনা করবে ধর্মে তাঁর প্রতি

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

বিশুদ্ধচিত্ত হয়ে, একনিষ্ঠভাবে, আর নামায কায়েম করবে ও যাকাত আদায় করবে, -- আর এইটিই সুপ্রতিষ্ঠিত ধর্ম।

And they were commanded not, but that they should worship Allah, and worship none but Him Alone (abstaining from ascribing partners to Him), and perform As-Salat (Iqamat-as-Salat) and give Zakat: and that is the right religion.

और उन्हें आदेश भी बस यही दिया गया था कि वे अल्लाह की बन्दगी करे निष्ठा एवं विनयशीलता को उसके लिए विशिष्ट करके, बिलकुल एकाग्र होकर, और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दे। और यही है सत्यवादी समुदाय का धर्म



<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

Aal-i-Imraan (3:106)

يَوْمَ تَبْيَضُ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُ وُجُوهٌ فَأَمَّا ٱلذِينَ أَسْوَدَتْ وُجُوهُهُمْ أَكْفَرْتُم بَعْدَ إِيمَٰنِكُمْ فَدُوقُوا ٱلْعَدَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ

جس دن بعض چہرے سفید ہوں گے اور سے کہا) سیاہ چہرے والوں،بعض سیاہ کہ کیا تم نے ایمان لانے کے بعد (جائے گا کفر کیا؟ اب اپنے کفر کا عذاب چکھو

يوم القيامة تبيّض وجوه أهل السعادة ورسوله وامتثلوا أمره،الذين آمنوا بالله ورسوله وتسوّد وجوه أهل الشقاوة ممن كذبوا فأما الذين اسودت وعصوا أمره،رسوله أكفرتم بعد فيقال لهم توبيخًا،وجوههم

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

فاخترتم الكفر على الإيمان؟ ،إيمانكم فذوقوا العذاب بسبب كفركم

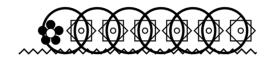
যেদিন কতকগুলো চেহারা হবে ঝক্ঝকে আর কতকগুলো চেহারা হবে মিসমিসে, তারপর যাদের চেহারা কালো হবে তাদের ক্ষেত্রে — "তোমরা কি অবিশ্বাস পোষণ করেছিলে তোমাদের ঈমান আনার পরে? অতএব যন্ত্রণার আস্বাদ গ্রহণ করো যেহেতু তোমরা অবিশ্বাস পোষণ করছিলে।"

On the Day (i.e. the Day of Resurrection) when some faces will become white and some faces will become black; as for those whose faces will become black (to them will be said): "Did you reject Faith after accepting it? Then taste the torment (in Hell) for rejecting Faith."

जिस दिन कितने ही चेहरे उज्ज्वल होंगे और कितने ही

<mark>///...Al-Haji (</mark>22:78)

चेहरे काले पड़ जाएँगे, तो जिनके चेहेर काले पड़ गए होंगे (वे सदा यातना में ग्रस्त रहेंगे। खुली निशानियाँ आने का बाद जिन्होंने विभेद किया) उनसे कहा जाएगा, "क्या तुमने ईमान के पश्चात इनकार की नीति अपनाई? तो लो अब उस इनकार के बदले में जो तुम करते रहे हो, यातना का मज़ा चखो।"



Ash-Shura (42:15)

فَلِدَٰلِكَ فَآدْعُ وَأَسْتَقِمْ كَمَآ أُمِرْتَ وَلَا تَتَبِعْ أَهْوَآءَهُمْ وَقُلْ ءَامَنتُ بِمَآ أَنزَلَ ٱللهُ مِنَ كِتَٰبٍ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمُ ٱللهُ رَبُنَا وَرَبُكُمْ لَنَآ أَعْمَلُنَا وَلَكُمْ أَعْمَلُكُمْ لَا حُجّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ ٱللهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا وَإِلَيْهِ ٱلْمَصِيرُ

پس آپ لوگوں کو اسی طرف بلاتے رہیں

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

اور جو کچھ آپ سے کہا گیا ہے اس پر مضبوطی سے جم جائیں اور ان کی خواہشوں پر نہ چلیں اور کہہ دیں کہ الله تعالیٰ نے جتنی کتابیں نازل فرمائی ہیں میرا ان پر ایمان ہے اور مجھے حکم دیا گیا ہے کہ تم میں انصاف کرتا رہوں۔ ہمارا اور تم سب کا پروردگار الله ہی ہے ہمارے اعمال ہمارے لیے ہیں اور تمہارے اعمال تمہارے لیے ہیں، ہم تم میں کوئی اعمال تمہارے لیے ہیں، ہم تم میں کوئی کٹ حجتی نہیں الله تعالیٰ ہم (سب) کو جمع کرے گا اور اسی کی طرف لوٹنا ہے

فإلى ذلك الدين القيّم الذي شرعه الله للأ نبياء ووصّاهم به، فادع _أيها الرسول_ عباد الله، واستقم كما أمرك الله، ولا تتبع أهواء الذين شكّوا في الحق وانحرفوا عن الدين، وقل صدّقت بجميع الكتب المنزلة

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

من السماء على الأنبياء، وأمرني ربي أن أعدل بينكم في الحكم، الله ربنا وربكم لنا ثواب أعمالنا الصالحة، ولكم جزاء أعمالكم السيئة، لا خصومة ولا جدال بيننا وبينكم بعدما تبين الحق، الله يجمع بيننا وبينكم يوم القيامة، فيقضي بيننا بالحق ،فيما اختلفنا فيه، وإليه المرجع والمآب فيجازي كلا بما يستحق

কাজেই এর প্রতি তুমি তবে আহ্বান করতে থাকো, আর তোমাকে যেমন আদেশ করা হয়েছে তেমনিভাবে তুমি অটল থাকো, আর তাদের খেয়ালখুশির অনুগমন করো না, বরং বলো —— 'আমি বিশ্বাস করি তাতে যা আল্লাহ্ অবতারণ করেছেন এ গ্রন্থ থেকে, আর আমাকে আদেশ করা হয়েছে তোমাদের মধ্যে ন্যায়বিচার করতে। আল্লাহ্ আমাদের প্রভু এবং তোমাদেরও প্রভু। আমাদের কাজ হবে আমাদের জন্য এবং

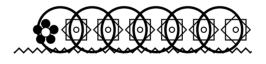
///...Al-Hajj (22:78)

তোমাদের কাজ হবে তোমাদের জন্য। আমাদের মধ্যে ও তোমাদের মধ্যে কোনো বিবাদ-বিসংবাদ নেই। আল্লাহ্ আমাদের একত্রিত করবেন। আর তাঁর কাছেই তো প্রত্যাবর্তন।"

So unto this (religion of Islam, alone and this Quran) then invite (people) (O Muhammad SAW), and Istaqim [(i.e. stand firm and straight on Islamic Monotheism by performing all that is ordained by Allah (good deeds, etc.), and by abstaining from all that is forbidden by Allah (sins and evil deeds, etc.)], as you are commanded, and follow not their desires but say: "I believe in whatsoever Allah has sent down of the Book [all the holy Books, this Quran and the Books of the old from the Taurat (Torah), or the Injeel (Gospel) or the Pages of Ibrahim (Abraham)] and I am commanded to do justice among you, Allah is our Lord and your Lord. For us our deeds and for you your deeds. There is no dispute

between us and you. Allah will assemble us (all), and to Him is the final return.

अतः इसी लिए (उन्हें सत्य की ओर) बुलाओ, और जैसा कि तुम्हें हुक्म दिया गया है स्वयं क़ायम रहो, और उनकी इच्छाओं का पालन न करना और कह दो, "अल्लाह ने जो किताब अवतरित की है, मैं उसपर ईमान लाया। मुझे तो आदेश हुआ है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँ। अल्लाह ही हमारा भी रब है और तुम्हारा भी। हमारे लिए हमारे कर्म है और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। हममें और तुममें कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको इकट्ठा करेगा और अन्ततः उसी की ओर जाना है।"



তাহলে আল্লাহ্র দল, তারাই হবে

<u>বিজয়ী।___</u>

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

निश्चय ही अल्लाह का गिरोह प्रभावी

होकर रहेगा

Hizbullaahi.

Al-Maaida (5:56) بسرالله م باللحجمان

وَمَن يَتَوَلَّ ٱللهَ وَرَسُولُهُۥ وَٱلذِينَ ءَامَنُوا فَإِنَّ حِرْبَ ٱللهِ هُمُ ٱلْعَلِبُونَ

اور جو شخص الله تعالیٰ سے اور اس کے رسول سے اور مسلمانوں سے دوستی کرے، وہ یقین مانے کہ الله تعالیٰ کی جماعت ہی غالب رہے گی

ومن وثق بالله وتولى الله ورسوله و المؤمنين، فهو من حزب الله وحزب الله . هم الغالبون المنتصرون

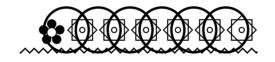
<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

আর যে কেউ বন্ধুরূপে গ্রহণ করে আল্লাহ্কে, ও তাঁর রসূলকে, আর যারা ঈমান এনেছে তাদের,

<u>তাহলে আল্লাহ্র দল, তারাই হবে</u> <u>বিজয়ী।</u>

And whosoever takes Allah, His Messenger, and those who have believed, as Protectors, then the party of Allah will be the victorious.

अब जो कोई अल्लाह और उसके रसूल और ईमानवालों को अपना मित्र बनाए, तो <u>निश्चय ही</u> अल्लाह का गिरोह प्रभावी होकर रहेगा



Al-Maaida (5:56) بسرالله الرخيمين

وَمَن يَتَوَلَّ ٱللهَ وَرَسُولهُۥ وَٱلذِينَ ءَامَنُوا ْ

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

فَإِنَّ حِرْبَ ٱللهِ هُمُ ٱلْعَلِبُونَ

اور جو شخص الله تعالیٰ سے اور اس کے رسول سے اور مسلمانوں سے دوستی کرے، وہ یقین مانے کہ الله تعالیٰ کی جماعت ہی غالب رہے گی

ومن وثق بالله وتولى الله ورسوله و المؤمنين، فهو من حزب الله وحزب الله علم العالبون المنتصرون

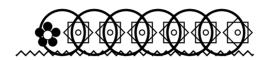
আর যে কেউ বন্ধুরূপে গ্রহণ করে আল্লাহ্কে, ও তাঁর রসূলকে, আর যারা ঈমান এনেছে তাদের, তাহলে আল্লাহ্র দল, তারাই হবে বিজয়ী।

And whosoever takes Allah, His Messenger, and those who have believed, as Protectors, then the party of Allah will be the victorious.

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

......

अब जो कोई अल्लाह और उसके रसूल और ईमानवालों को अपना मित्र बनाए, तो निश्चय ही अल्लाह का गिरोह प्रभावी होकर रहेगा



প্রত্যেক দলই যা তাদের কাছে রয়েছে তাতেই উল্লসিত।

<u>---हर गिरोह के पास जो कुछ है,</u>

उसी में मग्न है

-----Each Sect is Rejoicing in that which is with it.

Ar-Room (30:32) بسرالله م باللحم

مِنَ ٱلذِينَ فَرَقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا كُلُّ

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فُرِحُونَ

ان لوگوں میں سے جنہوں نے اپنے دین کو ٹکڑے ٹکڑے کر دیا اور خود بھی گروہ گروہ ہوگئے ہر گروہ اس چیز پر جو اس کے پاس ہے مگن ہے

ولا تكونوا من المشركين وأهل الأهواء و البدع الذين بدّلوا دينهم، وغيّروه، فأخذوا بعضه، وتركوا بعضه؛ تبعًا لأهوائهم، فصاروا فرقًا وأحزابًا، يتشيعون لرؤسائهم وأحزابهم ،وآرائهم، يعين بعضهم بعضًا على الباطل ،كل حزب بما لديهم فرحون مسرورون ،كل حزب بما لديهم فرحون مسرورون يحكمون لأنفسهم بأنهم على الحق وغيرهم يعلى الباطل

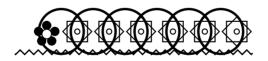
তাদের দলের যারা তাদের ধর্মকে বিভক্ত করেছে আর তারা হয়ে গেছে নানা দলীয়। প্রত্যৈক

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

দলই যা তাদের কাছে রয়েছে তাতেই উল্লসিত।

Of those who split up their religion (i.e. who left the true Islamic Monotheism), and became sects, [i.e. they invented new things in the religion (Bid'ah), and followed their vain desires], each sect rejoicing in that which is with it.

उन लोगों में से जिन्होंने अपनी दीन (धर्म) को टुकड़े-टुकड़े कर डाला और गिरोहों में बँट गए। <u>हर</u> <u>गिरोह के पास जो कुछ है, उसी में मग्न</u> <u>है</u>



<u>শয়তান তাদের উপরে কাবু করে</u> ফেলেছে, সেজন্য সে তাদের আল্লাহ্

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

<u>क्त स्प्रतं कता जूलिया पिया है।</u>

<u>प्रभाव जमा लिया है। अतः उसने</u>

<u>अल्लाह की याद को उनसे भुला</u>

<u>दिया।---- Shaitan (Satan) has</u>

<u>overtaken them. So he has made</u>

<u>Allah.</u>

Al-Mujaadila (58:19)

أَسْتَحُودَ عَلَيْهِمُ ٱلشَّيْطُنُ فَأَنسَىٰهُمْ ذِكْرَ ٱللهِ أُولَٰئِكَ حِرْبُ ٱلشَّيْطِنِ أَلَآ إِنَّ حِرْبَ ٱلشَّيْطِنِ هُمُ ٱلْخُسِرُونَ

،ان پر شیطان نے غلبہ حاصل کرلیا ہے

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

اور انہیں الله کا ذکر بھلا دیا ہے یہ شیطانی لشکر ہے۔ کوئی شک نہیں کہ شیطانی لشکر ہی خسارے والا ہے

،غلب عليهم الشيطان، واستولى عليهم ،حتى تركوا أوامر الله والعمل بطاعته أولئك حزب الشيطان وأتباعه ألا إن حزب الشيطان هم الخاسرون في الدنيا والآخرة

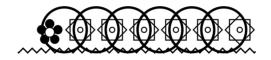
শয়তান তাদের উপরে কাবু করে
ফলেছে, সেজন্য সে তাদের আল্লাহ্কে
স্মরণ করা ভুলিয়ে দিয়েছে। এরাই হচ্ছে
শয়তানের দল। এটি কি নয় যে শয়তানের
সাঙ্গোপাঙ্গরা নিজেরাই তো ক্ষতিগ্রস্ত দল?

Shaitan (Satan) has overtaken them. So he has made them forget the remembrance of Allah. They

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

are the party of Shaitan (Satan). Verily, it is the party of Shaitan (Satan) that will be the losers!

उनपर शैतान ने पूरी तरह अपना प्रभाव जमा लिया है। अतः उसने अल्लाह की याद को उनसे भुला दिया। वे शैतान की पार्टीवाले हैं। सावधान रहो शैतान की पार्टीवाले ही घाटे में रहनेवाले हैं/



(58:20) Al-Mujaadila (58:20) بسلطته إنّ الذينَ يُحَاَدُونَ اللهَ وَرَسُولهُۥٓ أُولَٰئِكَ فِى اللهَ لَيْنَ

بیشک الله تعالیٰ کی اور اس کے رسول کی جو لوگ مخالفت کرتے ہیں وہی لوگ

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

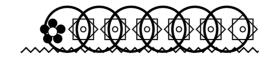
سب سے زیادہ ذلیلوں میں ہیں

إن الذين يخالفون أمر الله ورسوله، أولئك من جملة الأذلاء المغلوبين المهانين في الدنيا والآخرة

নিঃসন্দেহ যারা আল্লাহ্র ও তাঁর রসূলের বিরুদ্ধাচরণ করে তারাই হবে চরম লাঞ্ছিতদের মধ্যেকার।

Those who oppose Allah and His Messenger (Muhammad SAW), they will be among the lowest (most humiliated).

निश्चय ही जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते है वे अत्यन्त अपमानित लोगों में से है



<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

तुम सब इस्लाम में दाख़िल हो जाओ और शैतान के पदचिन्ह पर न चलो।----সম্পূর্ণরূপে আত্মসমর্পণে দাখিল হও, আর শয়তানের পদচিহ্ন

<u>অনুসরণ করো না ----Enter</u> <u>perfectly in Islam</u>

Al-Bagara (2:208)

بس<u>االلهم</u> الاحتمال

بَّأَيُّهَا ٱلذِينَ ءَامَنُوا أَدْخُلُوا فِي ٱلسِّلْمِ كَآفَةً وَلَا تَتَبِعُوا خُطُوَٰتِ ٱلشَّيْطِنِ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌ مُبِينٌ

ایمان والو/ اسلام میں پورے پورے داخل ہوجاؤ اور شیطان کے قدموں کی تابعداری نہ کرو وہ تمہارا کھلا دشمن ہے

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

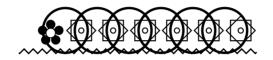
يا أيها الذين آمنوا بالله ربًا وبمحمد نبيًا ورسولا وبالإسلام دينًا، ادخلوا في جميع شرائع الإسلام، عاملين بجميع أحكامه، ولا تتركوا منها شيئًا، ولا تتبعوا طرق الشيطان فيما يدعوكم إليه من المعاصي إنه لكم عدو ظاهر العداوة فاحذروه

ওহে যারা ঈমান এনেছ/ সম্পূর্ণরূপে <u>আত্মসমর্পণে দাখিল হও, আর</u>
শয়তানের পদচিহ্ন অনুসরণ করো না।
নিঃসন্দেহ সে তোমাদের জন্য প্রকাশ্য শত্রু।

O you who believe! Enter perfectly in Islam (by obeying all the rules and regulations of the Islamic religion) and follow not the footsteps of Shaitan (Satan). Verily! He is to you a plain enemy.

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

हो जाओ और शैतान के पदचिन्ह पर न चलो। वह तो तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है



Al-Baqara (2:209)

فإن زَلْتُم مِّن بَعْدِ مَا جَآءَتُكُمُ ٱلْبَيِّنْتُ فَإِن زَلْتُم مِّن بَعْدِ مَا جَآءَتُكُمُ ٱلْبَيِّنْتُ فَأَعْلَمُوا أَن ٱللهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

اگر تم باوجود تمہارے پاس دلیلیں آجانے کے بھی پھسل جاؤ تو جان لو کہ الله تعالیٰ غلبہ والا اور حکمت والا ہے

فإن انحرفتم عن طريق الحق، من بعد ما جاءتكم الحجج الواضحة من القرآن و

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

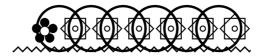
السنة، فاعلموا أن الله عزيز في ملكه لا يفوته شيء، حكيم في أمره ونهيه، يضع كل شيء في موضعه المناسب له

কিন্তু যদি তোমরা পিছলে পড় তোমাদের কাছে স্পষ্ট প্রমাণাবলী আসবার পরেও, তবে জেনে রেখো –– নিঃসন্দেহ আল্লাহ মহাশক্তিশালী, পরমজ্ঞানী।

Then if you slide back after the clear signs (Prophet Muhammad SAW) and this Quran, and Islam) have come to you, then know that Allah is All-Mighty, All-Wise.

फिर यदि तुम उन स्पष्टा दलीलों के पश्चात भी, जो तुम्हारे पास आ चुकी है, फिसल गए, तो भली-भाँति जान रखो कि अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>



-- णता कि ज्य आल्लाइत धर्म ছाড़ा আत किছু খুজঁছে? আत जाँत প্রতি আত্মসমর্পণ করছে যে কেউ আছে মহাকাশমন্ডলে ও পৃথিবীতে--- अब क्या इन लोगों को अल्लाह के दीन (धर्म) के सिवा किसी और दीन की तलब है, हालाँकि---- Do they seek other than the religion of Allah

Aal-i-Imraan (3:83)

أَفْعَيْرَ دِينِ ٱللهِ يَبْغُونَ ۖ وَلهُۥٓ أَسْلَمَ مَن فِي ٱلسَّمُوٰتِ وَٱلأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

کیا وہ الله تعالیٰ کے دین کے سوا اور دین کی تلاش میں ہیں؟ حالانکہ تمام آسمانوں والے اور سب زمین والے الله تعالیٰ ہی کے فرمانبردار ہیں خوشی سے ہوں یا ناخوشی سے، سب اسی کی طرف لوٹائے جائیں گے

أيريد هؤلاء الفاسقون من أهل الكتاب غير دين الله ـوهو الإسلام الذي بعث الله به محمدا صلى الله عليه وسلم ـ، مع أن كل من في السموات والأرض استسلم وانقاد وخضع لله طواعية ـكالمؤمنين ـ ورغمًا عنهم عند الشدائد، حين لا ينفعهم ذلك ،وهم الكفار، كما خضع له سائر الكائنات وإليه يُرجَعون يوم المعاد، فيجازي كلا وإليه يُرجَعون يوم المعاد، فيجازي كلا

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

بعمله وهذا تحذير من الله تعالى لخلقه أن يرجع إليه أحد منهم على غير ملة الإ سلام

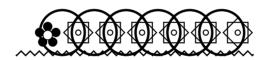
তারা কি তবে আল্লাহ্র ধর্ম ছাড়া আর
কিছু খুজঁছে? আর তাঁর প্রতি
আত্মসমর্পণ করছে যে কেউ আছে
মহাকাশমন্ডলে ও পৃথিবীতে -- স্বেচ্ছায়
অথবা অনিচ্ছায়; আর তাঁর কাছেই
তাদের ফিরিয়ে আনা হবে।

Do they seek other than the religion of Allah (the true Islamic Monotheism worshipping none but Allah Alone), while to Him submitted all creatures in the heavens and

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

the earth, willingly or unwillingly. And to Him shall they all be returned.

अब क्या इन लोगों को अल्लाह के दीन (धर्म) के सिवा किसी और दीन की तलब है, हालाँकि आकाशों और धरती में जो कोई भी है, स्वेच्छापूर्वक या विवश होकर उसी के आगे झुका हुआ है। और उसी की ओर सबको लौटना है?



<u>আর তাঁর চাইতে কে বেশী</u>

<u>ধর্মপরায়ণ যে আল্লাহ্র দিকে</u>

<u>আপন মৃখমন্ডল সমর্পণ করেছে</u>

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

আর সে সৎকর্মী, আর যে----- और दीन (धर्म) की स्पष्ट से उस व्यक्ति से अच्छा कौन हो सकता है, जिसने अपने आपको अल्लाह के आगे झुका दिया और इबराहीम के तरीक़े का अनुसरण करे, जो सबसे कटकर एक का हो गया <u>था?----And who can be better in</u> religion than one who submits his face (himself) to Allah (i.e. follows Allah's Religion of <u>Islamic Monotheism)</u>

> An-Nisaa (4:125) بسراللهم بالرنجيم

> > <u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِّمِّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُۥ لِلهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَأَتْبَعَ مِلَةَ إِبْرُهِيمَ حَنِيقًا وَأَتْخَذَ ٱللهُ إِبْرُهِيمَ خَلِيلًا

باعتبار دین کے اس سے اچھا کون ہے؟ جو اپنے کو الله کے تابع کر دے اور ہو بھی نیکو کار، ساتھ ہی یکسوئی والے ابراہیم کے دین کی پیروی کر رہا ہو اور ابراہیم (علیہ السلام) کو الله تعالیٰ نے اپنا دوست بنا لیا ہے

لا أحد أحسن ديئًا ممن انقاد بقلبه وسائر ، جوارحه لله تعالى وحده، وهو محسن واتبع دين إبراهيم وشرعه، مائلا عن العقائد الفاسدة والشرائع الباطلة وقد اصطفى الله إبراهيم عليه الصلاة والسلام واتخذه صفيًا من بين سائر خلقه وفي

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

هذه الآية، إثبات صفة الخُلة لله _تعالى_ وهي أعلى مقامات المحبة، والاصطفاء An-Nisaa (4:124)

<u>আর তাঁর চাইতে কে বেশী ধর্মপরায়ণ</u>
<u>যে আল্লাহ্র দিকে আপন মূখমন্ডল</u>
<u>সমর্পণ করেছে আর সে সৎকর্মী, আর</u>
<u>যে সরল স্বভাব ইব্রাহীমের ধর্মমত</u>
<u>অনুসরণ করে?</u> আর আল্লাহ্
ইব্রাহীমকে গ্রহণ করেছিলেন বন্ধুরূপে।

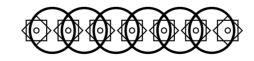
আর আল্লাহ্রই যা-কিছু আছে মহাকাশমন্ডলে ও যা-কিছু পৃথিবীতে। আর আল্লাহ্ হচ্ছেন সব-কিছুরই বেষ্টনকারী।

And who can be better in religion than one who

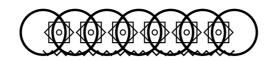
<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

submits his face (himself) to Allah (i.e. follows Allah's Religion of Islamic Monotheism); and he is a Muhsin (a good-doer - see V. 2:112). And follows the religion of Ibrahim (Abraham) Hanifa (Islamic Monotheism - to worship none but Allah Alone). And Allah did take Ibrahim (Abraham) as a Khalil (an intimate friend).

और दीन (धर्म) की स्पष्ट से उस व्यक्ति से अच्छा कौन हो सकता है, जिसने अपने आपको अल्लाह के आगे झुका दिया और इबराहीम के तरीक़े का अनुसरण करे, जो सबसे कटकर एक का हो गया था? अल्लाह ने इबराहीम को अपना घनिष्ठ मित्र बनाया था



<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78)



An-Nisaa (4:126)

وَلِلهِ مَا فِي ٱلسَّمُوٰتِ وَمَّا فِي ٱلأَرْضِ وَكَانَ ٱللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُحِيطًا

اسمانوں اور زمین میں جو کچھ ہے سب الله ہی کا ہے اور الله تعالیٰ ہر چیز کو گھیرنے والا ہے

ولله جميع ما في هذا الكون من المخلوقات، فهي ملك له تعالى وحده وكان الله تعالى بكل شيء محيطًا، لا يخفى عليه شيء من أمور خلقه

আর নারীদের সন্বন্ধে তারা তোমার কাছে সিদ্ধান্ত

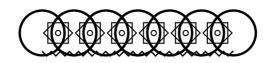
<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

চায়। বলো — 'আল্লাহ্ তাদের সম্বন্ধে তোমাদের কাছে সিদ্ধান্ত দিয়েছেন, আর যা তোমাদের কাছে কিতাবখানিতে বর্ণনা করা হয়েছে নারীদের এতীম সন্তানদের সম্বন্ধে, যাদের তোমরা দিতে চাও না তাদের জন্য নির্ধারিত প্রাপ্য, অথচ তোমরা ইচ্ছা করো যে তাদের তোমরা বিয়ে করবে, আর সন্তানসন্ততিদের মধ্যের দুর্বলদের সম্বন্ধে, আর যেন এতীমদের প্রতি ন্যায়বিচার করা তোমরা কায়েম করো।" আর ভালো বিষয়ের যা-কিছু তোমরা করো, নিঃসন্দেহ আল্লাহ্ সে- সম্বন্ধে হচ্ছেন

And to Allah belongs all that is in the heavens and all that is in the earth. And Allah is Ever Encompassing all things.

जो कुछ आकाशों में और जो कुछ धरती में है, वह अल्लाह ही का है और अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>



Al-An'aam (6:14)

قُلْ أَغَيْرَ ٱللهِ أَتَّخِدُ وَلِيًّا فَاطِرِ ٱلسَّمَّوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ قُلْ إِتِّى أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أُوّلَ مَنْ أَسْلُمَ وَلَا تَكُونَنَ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ

آپ کہیے کہ کیا اللہ کے سوا، جو کہ آسمانوں اور زمین کا پیدا کرنے والا ہے اور جو کہ کھانے کو دیتا ہے اور اس کو کوئی کھانے کو نہیں دیتا، اور کسی کو معبود قرار دوں، آپ فرما دیجئے کہ مجھ کو یہ حکم ہوا ہے کہ سب سے پہلے میں اسلام قبول کروں اور تو مشرکین میں ہرگز نہ ہونا

///...Al-Hajj (22:78)

قل _أيها الرسول_ لهؤلاء المشركين مع الله تعالى غيره أغير الله تعالى أتخذ وليًا ونصيرًا وهو خالق السموات والأرض وما فيهن، وهو الذي يرزق خلقه ولا يرزقه أحد؟ قل _أيها الرسول_ إني أمِرْتُ أن أكون أول مَن خضع وانقاد له بالعبودية من هذه الأمة، ونهيت أن أكون معه غيره

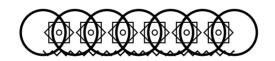
বলো -- 'আমি কি মহাকাশমন্ডল ও পৃথিবীর আদি-স্রষ্টা আল্লাহ্ ব্যতীত অন্যকে মুরব্বীরূপে গ্রহণ করবো, অথচ তিনি খাওয়ান, কিন্ত তাঁকে খাওয়ানো হয় না।" বলো -- 'আমি নিশ্চয়ই আদিষ্ট হয়েছি যেন যারা আত্মসমর্পণ করে তাদের মধ্যে আমি অগ্রণী হই।" আর তুমি মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

Say (O Muhammad SAW): "Shall I take as a Wali (helper, protector, etc.) any other than Allah, the Creator of the heavens and the earth? And it is He

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

Who feeds but is not fed." Say: "Verily, I am commanded to be the first of those who submit themselves to Allah (as Muslims)." And be not you (O Muhammad SAW) of the Mushrikun [polytheists, pagans, idolaters and disbelievers in the Oneness of Allah].

कहो, "क्या मैं आकाशों और धरती को पैदा करनेवाले अल्लाह के सिवा किसी और को संरक्षक बना लूँ? उसका हाल यह है कि वह खिलाता है और स्वयं नहीं खाता।" कहो, "मुझे आदेश हुआ है कि सबसे पहले मैं उसके आगे झुक जाऊँ। और (यह कि) तुम बहुदेववादियों में कदापि सम्मिलित न होना।"



Al-An'aam (6:15)

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

قُلْ إِتِى أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّى عَدَابَ يَوْمِ عَظِيمٍ

آپ کہہ دیجئے کہ میں اگر اپنے رب کا کہنا نہ مانوں تو میں ایک بڑے دن کے عذاب سے ڈرتا ہوں

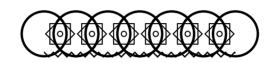
قل _أيها الرسول_ لهؤلاء المشركين مع ،الله غيره إني أخاف إن عصيت ربي فخالفت أمره، وأشركت معه غيره في عبادته، أن ينزل بي عذاب عظيم يوم القيامة

তুমি বলো –– "আমি অবশ্যই ভয় করি এক ভীষণ দিনের শাস্তি যদি আমি আমার প্রভুর অবাধ্যতা করি।"

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

Say: "I fear, if I disobey my Lord, the torment of a Mighty Day."

कहो, 'यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ, तो उस स्थिति में मुझे एक बड़े (भयानक) दिन की यातना का डर है।"



Al-Ghaafir (40:66)

قُلْ إِتِى ثَهِيتُ أَنْ أَعْبُدُ ٱلذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللهِ لَمَّا جَآءَنِىَ ٱلبَيِّنَتُ مِن رَبِّى وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ ٱلعَلْمِينَ

آپ کہہ دیجئے/ کہ مجھے ان کی عبادت سے روک دیا گیا ہے جنہیں تم الله کے سوا پکار رہے ہو اس بنا پر کہ میرے پاس میرے رب کی دلیلیں پہنچ چکی

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

ہیں، مجھے یہ حکم دیا گیا ہے کہ میں تمام جہانوں کے رب کا تابع فرمان ہو جاؤں

قل _أيها الرسول_ لمشركي قومك إني ،ثهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله لـمّا جاءني الآيات الواضحات من عند ربي، وأمرني أن أخضع وأنقاد بالطاعة التامة له، سبحانه رب العالمين

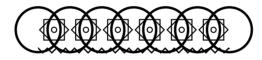
বলো — নিঃসন্দেহ আমাকে নিষেধ করা হয়েছে তাদের উপাসনা করতে যাদের তোমরা উপাসনা কর আল্লাহ্কে বাদ দিয়ে, — যখন আমার কাছে আমার প্রভুর কাছ থেকে স্পষ্ট প্রমাণাবলী এসেছে, আর আমাকে নির্দেশ দেওয়া হয়েছে যেন আমি বিশ্বজগতের প্রভুর প্রতি আত্মসমর্পণ করি।

Say (O Muhammad SAW): "I have been

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

forbidden to worship those whom you worship besides Allah, since there have come to me evidences from my Lord, and I am commanded to submit (in Islam) to the Lord of the 'Alamin (mankind, jinns and all that exists).

कह दो, "मुझे इससे रोक दिया गया है कि मैं उनकी बन्दगी करूँ जिन्हें अल्लाह से हटकर पुकारते हो, जबिक मेरे पास मेरे रब की ओर से खुले प्रमाण आ चुके है। मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं सारे संसार के रब के आगे नतमस्तक हो जाऊँ।" –



নিঃসন্দেহ আল্লাহ্ ক্ষমা করেন না তাঁর সঙ্গে শরিক করা হোক, আর তা ছাড়া সব-কিছু তিনি ক্ষমা করেন যার জন্য তিনি ইচ্ছে

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

<u>করেন---()</u>निस्संदेह अल्लाह इस चीज़

को क्षमा नहीं करेगा कि उसके साथ

किसी को शामिल किया

<u>जाए----Shirk</u>

An-Nisaa (4:116)

بس<u>االلهم</u> الرحيمن

إِنَّ ٱللهَ لَا يَعْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَعْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَن يَشَآءُ وَمَن يُشْرِكُ بِٱللهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَّا بَعِيدًا

إن الله تعالى لا يغفر أن يشرك به، ويغفر ما دون الشرك من الذنوب لمن يشاء من عباده ومن يجعل لله تعالى الواحد الأحد شريكًا من خلقه، فقد بَعُدَ عن الحق بعدًا كبيرًا

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

اسے الله تعالیٰ قطعاً نہ بخشے گا کہ اس کے ساتھ شرک مقرر کیا جائے، ہاں شرک کے علاوہ گناہ جس کے چاہے معاف فرما دیتا ہے اور الله کے ساتھ شریک کرنے والا بہت دور کی گمراہی میں جا پڑا

निस्संदेह अल्लाह इस चीज़ को क्षमा नहीं करेगा कि उसके साथ किसी को शामिल किया जाए। हाँ, इससे नीचे दर्जे के अपराध को, जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा। जो अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराता है, तो वह भटककर बहुत दूर जा पड़ा

An-Nisaa (4:115)

নিঃসন্দেহ আল্লাহ্ ক্ষমা করেন না তাঁর সঙ্গে শরিক করা হোক, আর তা ছাড়া সব-কিছু তিনি ক্ষমা করেন যার জন্য

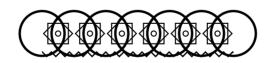
<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

তিনি ইচ্ছে করেন। আর যে কেউ আল্লাহ্র সঙ্গে অংশীদার করে সে নিশ্চয়ই বিপথগামী হয় সুদূর বিপথে।

r/4/115

তারা তো আহ্বান করে তাঁর পরিবর্তে শুধু নারী-মূর্তিদের, আর তারা তো আহ্বান করে শুধু বিদ্রোহী শয়তানকে, --

Verily! Allah forgives not (the sin of) setting up partners in worship with Him, but He forgives whom he pleases sins other than that, and whoever sets up partners in worship with Allah, has indeed strayed far away.



Al-An'aam (6:106) بسراللهم باللجمان

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

ٱتبعْ مَآ أُوحِىَ إِلَيْكَ مِن رَبِّكَ لَآ إِلَّهَ إِلَّا هُوَ وَأَعْرِضْ عَنِ ٱلمُشْرِكِينَ

اتبع _أيها الرسول_ ما أوحيناه إليك من الأ وامر والنواهي التي أعظمُها توحيد الله سبحانه والدعوة إليه، ولا تبال بعناد المشركين ، وادعائهم الباطل

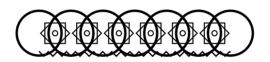
آپ خود اس طریق پر چلتے رہئے جس کی وحی آپ کے رب تعالیٰ کی طرف سے آپ کے پاس آئی ہے، الله تعالیٰ کے سوا کوئی لائق عبادت نہیں اور مشرکین کی طرف خیال نہ کیجئے

तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी तरफ़ जो वह्यो की गई है, उसी का अनुसरण किए जाओ, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं और बहुदेववादियों (की कुनीति) पर ध्यान न दो

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

তুমি তার অনুসরণ করো যা তোমার কাছে তোমার প্রভুর কাছ থেকে প্রত্যাদেশ দেওয়া হয়েছে --তিনি ছাড়া অন্য উপাস্য নেই; আর সরে দাঁড়াও বহুখোদাবাদীদের থেকে।

Follow what has been inspired to you (O Muhammad SAW) from your Lord, La ilaha illa Huwa (none has the right to be worshipped but He) and turn aside from Al-Mushrikun.



-তোমাদের জন্য অবৈধ হচ্ছে __ যা নিজে মারা গেছে, আর রক্ত, আর শুকরের মাংস, আর যা যবেহ্ করা হয়েছে আল্লাহ্ ছাড়া অন্য নাম নিয়ে, আর যা ---- নুদ্দাই লিए हराम

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

हुआ मुर्दार रक्त, सूअर का मांस और वह जानवर जिसपर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो और __---Forbidden

Things

Al-Maaida (5:3)

حُرَّمَتْ عَلَيْكُمُ ٱلْمَيْتَةُ وَٱلدَّمُ وَلَحْمُ ٱلْخِنزِيرِ
وَمَا أَهِلَ لِعَيْرِ ٱللهِ بِهِ وَٱلْمُنْخَنِقَةُ
وَالْمَوْقُودَةُ وَٱلْمُتَرَدِّيَةُ وَٱلنَّطِيحَةُ وَمَا أَكْلَ
السّبُعُ إِلَّا مَا دَكَيْتُمْ وَمَا دُبِحَ عَلَى ٱلنُّصُبِ
وَأَن تَسْتَقْسِمُوا بِٱلْأَرْلَم دَلِكُمْ فِسْقُ ٱليَوْمَ
يَئِسَ ٱلذِينَ كَفَرُوا مِن دِينِكُمْ فِلْا تَخْشَوْهُمْ
وَأَخْشَوْنَ ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينِكُمْ وَأَتْمَمْتُ
وَأَخْشَوْنَ ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينِكُمْ وَأَتْمَمْتُ
عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإسْلَمَ دِينًا
عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإسْلَمَ دِينًا
فَمَنَ أَضْطُرٌ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفَ لِإِنْمِ

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

.....

فَإِنَّ ٱللَّهَ غَقُورٌ رَّحِيمٌ

تم پر حرام کیا گیا مردار اور خون اور خنزیر کا گوشت اور جس پر الله کے سوا دوسرے کا نام پکارا گیا ہو اور جو گلا گھٹنے سے مرا ہو اور جو کسی ضرب سے مر گیا ہو اور جو اونچی جگہ سے گر کر مرا ہو اور جو کسی کے سینگ مارنے سے مرا ہو اور جسے درندوں نے پھاڑ کھایا ہو لیکن اسے تم ذبح کر ڈالو تو حرام نہیں اور جو آستانوں پر ذبح کیا گیا ہو اور یہ بھی کہ قرعہ کے تیروں کے ذریعے فال گیری آج کفار ،کرو یہ سب بدترین گناہ ہیں تم / خبردار،تمہارے دین سے ناامید ہوگئے ،ان سے نہ ڈرنا اور مجھ سے ڈرتے رہنا آج میں نے تمہارے لئے دین کو کامل کردیا اور تم پر اینا انعام بھرپور کردیا

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

اور تمہارے لئے اسلام کے دین ہونے پر رضامند ہوگیا۔ پس جو شخص شدت کی بھوک میں بے قرار ہو جائے بشرطیکہ کسی گناہ کی طرف اس کا میلان نہ ہو تو یقیناً الله تعالیٰ معاف کرنے والا اور بہت بڑا مہربان ہے

Forbidden to you (for food) are: Al-Maytatah (the dead animals - cattle-beast not slaughtered), blood, the flesh of swine, and the meat of that which has been slaughtered as a sacrifice for others than Allah, or has been slaughtered for idols, etc., or on which Allah 's Name has not been mentioned while slaughtering, and that which has been killed by strangling, or by a violent blow, or by a headlong fall, or by the goring of horns - and that which

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

has been (partly) eaten by a wild animal -

unless you are able to slaughter it (before its death) - and that which is sacrificed (slaughtered) on An-Nusub (stone altars). (Forbidden) also is to use arrows seeking luck or decision, (all) that is Fisgun (disobedience of Allah and sin). This day, those who disbelieved have given up all hope of your religion, so fear them not, but fear Me. This day, I have perfected your religion for you. completed My Favour upon you, and have chosen for you Islam as your religion. But as for him who is forced by severe hunger, with no inclination to sin (such can eat these above-mentioned meats), then surely, Allah is Oft-Forgiving, Most Merciful.

तुम्हारे लिए हराम हुआ मुर्दार रक्त, सूअर का मांस और वह जानवर जिसपर

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

अल्लाह 🎏 के अतिरिक्त किसी और का

नाम लिया गया हो और वह जो घुटकर या चोट खाकर या ऊँचाई से गिरकर या सींग लगने से मरा हो या जिसे किसी हिंसक पशु ने फाड़ खाया हो - सिवाय उसके जिसे तुमने ज़बह कर लिया हो - और वह किसी थान पर ज़बह कियी गया हो। और यह भी (तुम्हारे लिए हराम हैं) कि तीरो के द्वारा किस्मत मालूम करो। यह आज्ञा का उल्लंघन है - आज इनकार करनेवाले तुम्हारे धर्म की ओर से निराश हो चुके हैं तो तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे धर्म को पूर्ण कर दिया और तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दी और मैंने तुम्हारे धर्म के रूप में इस्लाम को पसन्द किया - तो जो कोई भूख से विवश हो जाए, परन्तु गुनाह की ओर उसका झुकाव न हो, तो निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील दयावान है

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

,,,,,,,,,,,,,,,

তামাদের জন্য অবৈধ হচ্ছে -- যা নিজে মারা গেছে, আর রক্ত, আর

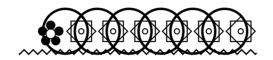
শুকরের মাংস, আর যা যবেহ্ করা

হয়েছে আল্লাহ্ ছাড়া অন্য নাম নিয়ে,

<u>আর যা</u> গলাটিপে মারা হয়েছে, আর যা ধাঁধা লাগিয়ে মারা হয়েছে, আর পড়ে গিয়ে যে মরেছে, আর যা শিঙের আঘাতে মরেছে — তোমরা যা বৈধ করেছ তা ব্যতীত, আর যা প্রস্তরবেদীতে বলি দেয়া হয়েছে, আর যা তোমরা ভাগাভাগি করেছ তীরের লটারি খেলেচ এ সমস্তই পাপাচার। যারা অবিশ্বাস পোষণ করে তারা আজকের দিনে তোমাদের ধর্ম সন্বন্ধে হতাশ্বাস হয়েছে, কাজেই তাদের ভয় করো না, বরং ভয় করো আমাকে। আজ আমি তোমাদের জন্য তোমাদের ধর্মব্যবস্থা পূর্ণাঙ্গ করলাম, আর তোমাদের উপরে আমার নিয়ামত সম্পূর্ণ করলাম, আর তোমাদের জন্য

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

ধর্মরূপে মনোনীত করলাম ইসলাম। অতএব যে কেউ ক্ষুধার তাড়নায় বাধ্য হয়, -- পাপের দিকে ঝোঁকে পড়ে নয়, -- তবে নিঃসন্দেহ আল্লাহ্ হচ্ছেন পরিত্রাণকারী, অফুরন্ত ফলদাতা।



-আর আল্লাহ্[®]রই হচ্ছে সবচাইতে ভালো নামাবলী, কাজেই তাঁকে -----अच्छे नाम अल्लाह[®] ही के है। तो तुम उन्हीं के द्वारा उसे पुकारो-----To Allaahu. [®]belong the Most Glorious Names-invoke,Supplicate,_ □○■○■

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

WWWWWWW

Al-A'raaf (7:180) بسراالله اللحجمان

وَلِلهِ ٱلنَّسْمَآءُ ٱلحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا وَدَرُوا الْدِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَّئِهِ مِسَيُحْزُوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ كَانُوا يَعْمَلُونَ كَانُوا يَعْمَلُونَ

اور اچھے اچھے نام اللہ ہی کے لیے ہیں سو ان ناموں سے اللہ ہی کو موسوم کیا کرو اور ایسے لوگوں سے تعلق بھی نہ رکھو جو اس کے ناموں میں کج روی ان لوگوں کو ان کے کئے کی ،کرتے ہیں ضرور سزا ملے گی

And All the Most Beautiful Names belong to Allah so, so call on Him by them, and leave the company of those who belie or deny (or utter impious speech against) His Names. They will be requited for what they used to do.

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

<u>अच्छे नाम अल्लाहॐ ही के है। तो तुम</u>

उन्हीं के द्वारा उसे पुकारों और उन लोगों को छोड़ों जो उस के नामों के सम्बन्ध में कुटिलता ग्रहण करते हैं। जो कुछ वे करते हैं, उसका बदला वे पाकर रहेंगे

আর আল্লাহ্ রুই হচ্ছে সবচাইতে ভালো নামাবলী, কাজেই তাঁকে ভাকো সেই সবের দ্বারা, আর তাদের ছেড়ে দাও যারা তাঁর নামাবলী নিয়ে বিকৃতি করে। অচিরেই তাদের প্রতিফল দেয়া হবে তারা যা করে যাচ্ছে তার জন্য।

○■○■○ --- আর আল্লাহ্ৠর বাণী -- তা হচ্ছে উচ্চতম। আর আল্লাহ্ৠ হচ্ছেন মহাশক্তিশালী,

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

MINIMINI I

পরমজ্ঞানী।

-----बोल तो अल्लाह है ही का ऊँचा रहता है। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशील, तत्वदर्शी है-----

The Word of Allah is the Loftiest, and Allah is All-Mighty,

All-Wise.

At-Tauba (9:40) بسرالله الرجيمان

إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ تَصَرَهُ اللهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الذِينَ كَفَرُوا ْ ثَانِيَ أَثْنَيْنَ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَحِبِهِ لِلْ تَحْزَنْ إِنَّ اللهَ مَعَنَا فَأُنْزَلَ اللهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيْدَهُ بِجُنُودٍ لَمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الذِينَ كَفَرُوا السُقْلَىٰ وَكِلِمَةُ اللهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

اگر تم ان (نبی صلی الله علیہ وسلم) کی مدد نہ کرو تو الله ہی نے ان کی مدد کی اس وقت جبکہ انہیں کافروں نے (دیس سے) نکال دیا تھا، دو میں سے دوسرا جبکہ وہ دونوں غار میں تھے جب یہ اپنے ساتھی سے کہہ رہے تھے کہ غم نہ کر الله ہمارے ساتھ ہے، یس جناب باری نے اپنی طرف سے تسکین اس پر نازل فرما کر ان لشکروں سے اس کی ،مدد کی جنہیں تم نے دیکھا ہی نہیں اس نے کافروں کی بات پست کر دی اور بلند وعزیز تو الله کا کلمہ ہی ہے، الله غ الب ہے حکمت والا ہے

If you help him (Muhammad SAW) not (it does not matter), for Allah did indeed help him when the

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

disbelievers drove him out, the second of two, when they (Muhammad SAW) and Abu Bakr) were in the cave, and he (SAW) said to his companion (Abu Bakr): "Be not sad (or afraid), surely Allah is with us." Then Allah sent down His Sakinah (calmness, tranquillity, peace, etc.) upon him, and strengthened him with forces (angels) which you saw not, and made the word of those who disbelieved the lowermost, while it was the Word of Allah had that became the uppermost, and Allah that became the uppermost, and Allah is All-Mighty, All-Wise.

यदि तुम उसकी सहायता न भी करो तो अल्लाह उसकी सहायता उस समय कर चुका है जब इनकार करनेवालों ने उसे इस स्थिति में निकाला कि वह केवल दो में का दूसरा था, जब वे दोनों गुफ़ा में थे। जबिक वह अपने साथी से कह रहा था, "शोकाकुल न हो। अवश्यमेव अल्लाह हमारे साथ है।" फिर अल्लाह ने उसपर अपनी ओर से

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

सकीनत (प्रशान्ति) उतारी और उसकी सहायता ऐसी सेनाओं से की जिन्हें तुम देख न सके और इनकार करनेवालों का बोल नीचा कर दिया, बोल तो अल्लाह कि ही का ऊँचा रहता है। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशील, तत्वदर्शी है

তোমরা যদি তাঁকে সাহায্য না কর তবে আল্লাহ্ তাঁকে ইতিপূর্বে সাহায্য করেছিলেন যখন যারা অবিশ্বাস পোষণ করেছিল তারা তাঁকে বের করে দিয়েছিল, দুই জনের দ্বিতীয় জন, যখন তাঁরা দুজন ছিলেন গুহার ভেতরে, যখন তিনি তাঁর সঙ্গীকে বলেছিলেন — 'বিষন্ন হয়ো না, নিঃসন্দেহ আল্লাহ্ আমাদের সঙ্গে রয়েছেন।" অতঃপর আল্লাহ্ তাঁর প্রশান্তি অবতারণ করেছিলেন তাঁর উপরে আর তাঁর বলবৃদ্ধি করেছিলেন এমন এক বাহিনী দিয়ে যাদের তোমরা দেখতে পাও নি, আর যারা অবিশ্বাস পোষণ করেছিল তাদের কথাবার্তাকে হেয়

করেছিলেন। <u>আর আল্লাহ্</u>ঞ্<u>র বাণী __ তা</u>

হচ্ছে উচ্চতম। আর আল্লাহ্ 🥍 হচ্ছেন

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

WWWWWWW

মহাশক্তিশালী, পরমজ্ঞানী।





আর সত্যকে তোমরা মিথ্যার পোশাক পরিয়ো না বা সত্যকে গোপন কর না, অথচ তোমরা

<u>জানো।</u>

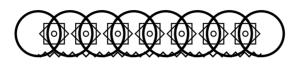
-और सत्य में असत्य का घाल-मेल न करो और जानते-बुझते सत्य को छिपाओ मत

----Mix not Truth with Falsehood,

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

MINIMINI I

<u>nor Conceal the Truth_ گنگا جمنا کا</u> مثال مت ضرب کر



Al-Bagara (2:42)

وَلَا تَلْبِسُوا ٱلْحَقِّ بِٱلْبَطْلِ وَتَكْتُمُوا ٱلْحَقِّ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ

اور حق کو باطل کے ساتھ خَلط مَلط نہ کرو اور نہ حق کو چھپاؤ، تمہیں تو خود اس کا علم ہے

And mix not truth with falsehood, nor conceal the truth while you know the truth.

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

और सत्य में असत्य का घाल-मेल न करो और जानते-बुझते सत्य को छिपाओ मत

<u>আর সত্যকে তোমরা মিথ্যার পোশাক</u> পরিয়ো না বা সত্যকে গোপন কর না, <u>অথচ তোমরা জানো।</u>

■--<u>আর নিশ্চয়ই তাদের মধ্যের</u>

একদল গ্রন্থপাঠে তাদের জিহ্বাকে

পাকিয়ে-বাঁকিয়ে তোলে যেন তোমরা
ভাবতে পারো তা গ্রন্থ থেকেই অথচ

তা গ্রন্থ থেকে নয়।--उनमें कुछ लोग

ऐसे है जो किताब पढ़ते हुए अपनी

///...Al-Hajj (22:78)

ज़बानों का इस प्रकार उलट-फेर करते है कि तुम समझों कि वह किताब ही में से है, जबकि वह किताब में से नहीं होता।---- Distortion of the Book with Tongues



Aal-i-Imraan (3:78)

بس<u>االلهم</u> الرحمن الرحيم

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَقَرِيقًا يَلُوَّ أَلْسِنَتَهُم بِٱلْكِتَٰبِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِندِ ٱللهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِندِ ٱللهِ وَيَقُولُونَ عَلَى ٱللهِ ٱلْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ

یقینأان میں ایسا گروہ بھی ہے جو کتاب پڑھتے ہوئے اپنی زبان مروڑتا ہے تاکہ تم

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

اسے کتاب ہی کی عبارت خیال کرو ،حالانکہ دراصل وہ کتاب میں سے نہیں اور یہ کہتے بھی ہیں کہ وہ الله تعالیٰ کی طرف سے ہے حالانکہ در اصل وہ الله تعالیٰ کی طرف سے نہیں، وہ تو دانستہ الله تعالیٰ پر جھوٹ بولتے ہیں دانستہ الله تعالیٰ پر جھوٹ بولتے ہیں

And verily, among them is a party who distort the Book with their tongues (as they read), so that you may think it is from the Book, but it is not from the Book, and they say: "This is from Allah, "but it is not from Allah they speak a lie against Allah while they know it."

उनमें कुछ लोग ऐसे है जो किताब पढ़ते हुए अपनी ज़बानों का इस प्रकार उलट-फेर करते है कि तुम समझों कि वह

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

किताब ही में से है, जबिक वह किताब में

से नहीं होता। और वे कहते हैं, "यह अल्लाह की ओर से है।" जबिक वह अल्लाह की ओर से नहीं होता। और वे जानते-बूझते झूठ गढ़कर अल्लाह अपर



<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

আর যে কেউ ইসলাম পরিত্যাগ করে অন্য কোনো ধর্ম অনুসরণ করে তা হলে তার কাছ থেকে কখনো তা कवल कवा रव ना--- जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलब करेगा तो उसकी ओर से कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा।जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलब करेगा तो उसकी ओर से कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा। ____ Whoever seeks a Religion other than Islam, it will never be <u>Accepted</u>



Aal-i-Imraan (3:85)

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

بس<u>االلهم</u> اللحيمان

وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَم دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي ٱلْءَاخِرَةِ مِنَ ٱلْخَسِرِينَ

جو شخص اسلام کے سوا اور دین تلاش کرے، اس کا دین قبول نہ کیا جائے گا اور وہ آخرت میں نقصان پانے والوں میں ہوگا

And whoever seeks a religion other than Islam, it will never be accepted of him, and in the Hereafter he will be one of the losers.

जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलब करेगा तो उसकी ओर से कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा। और आख़िरत में वह घाटा उठानेवालों में से होगा

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

আর যে কেউ ইসলাম পরিত্যাগ করে অন্য কোনো ধর্ম অনুসরণ করে তা হলে তার কাছ থেকে কখনো তা কবুল করা হবে না। আর আখেরে সে হবে ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত।



□■---তোমরা মানবগোষ্ঠীর জন্য

এক শ্রেষ্ঠ সমাজরূপে উত্থিত হয়েছ,
-- তোমরা ন্যায়ের পথে নির্দেশ দাও

ও অন্যায় থেকে নিষেধ করো,
আর----নুদ एक उत्तम समुदाय हो,
जो लोगों के समक्ष लाया गया है। तुम
नेकी का हुक्म देते हो और बुराई से

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

MILLIAN TO THE STATE OF THE STA

रोकते हो-আর---True Believers in Islamic Monotheism, and real Followers of Prophet Muhammad SAW ■○■○■○■○

Aal-i-Imraan (3:110)

بس<u>االلهم</u> اللحمن

كُنتُمْ خَيْرَ أُمَةٍ أُخْرَجَٰتُ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِٱلْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ ٱلْمُنكرِ وَتُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَلَوْ ءَامَنَ أَهْلُ ٱلْكِتَٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُم مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ ٱلْقَسِقُونَ

تم بہترین امت ہو جو لوگوں کے لئے پیدا کی گئی ہے کہ تم نیک باتوں کا حکم کرتے ہو اور بری باتوں سے روکتے ہو، اور الله تعالیٰ پر ایمان رکھتے ہو، اگر اہل کتاب بھی ایمان لاتے تو ان کے لئے

///...Al-Hajj (22:78)

بہتر تھا، ان میں ایمان والے بھی ہیں لیکن اکثر تو فاسق ہیں

You [true believers in Islamic Monotheism, and real followers of Prophet Muhammad SAW and his Sunnah (legal ways, etc.)] are the best of peoples ever raised up for mankind; you enjoin Al-Ma'ruf (i.e. Islamic Monotheism and all that Islam has ordained) and forbid Al-Munkar (polytheism, disbelief and all that Islam has forbidden), and you believe in Allah. And had the people of the Scripture (Jews and Christians) believed, it would have been better for them; among them are some who have faith, but most of them are Al-Fasiqun (disobedient to Allah - and rebellious against Allah Command).

तुम एक उत्तम समुदाय हो, जो लोगों के

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

समक्ष लाया गया है। तुम नेकी का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो। और यदि किताबवाले भी ईमान लाते तो उनके लिए यह अच्छा होता। उनमें ईमानवाले भी हैं, किन्तु उनमें अधिकतर लोग अवज्ञाकारी ही हैं

তোমরা মানবগোষ্ঠীর জন্য এক শ্রেষ্ঠ
সমাজরূপে উত্থিত হয়েছ, — তোমরা
ন্যায়ের পথে নির্দেশ দাও ও অন্যায়
থেকে নিষেধ করো, আর আল্লাহ্ ত
বিশ্বাস রাখো। আর গ্রন্থপ্রাপ্তরাও যদি ঈমান
আনতো তবে তাদের জন্য ভালো হতো/ তাদের
মধ্যে কেউ কেউ বিশ্বাসী, কিন্তু তাদের বেশির ভাগ
দুষ্টলোক।

০∎০∎০ ----আর যদি তোমরা

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>



Aal-i-Imraan (3:120) بسرالله بسرالله

إِن تَمْسَسُكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤُهُمْ وَإِن تُصِبُكُمْ سَيَّئَةٌ يَقْرَحُواْ بِهَا وَإِن تَصْبِرُواْ وَتَتَقُواْ لَآ يَضُرُكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْءًا إِنَّ ٱللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ يَضُرُكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْءًا إِنَّ ٱللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مَحِيطٌ

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

تمہیں اگر بھلائی ملے تو یہ ناخوش ہوتے ہیں ہاں/ اگر برائی پہنچے تو خوش ہوتے ہیں، تم اگر صبر کرو اور پرہیزگاری کرو تو ان کا مکر تمہیں کچھ نقصان نہ دے گا۔ الله تعالیٰ نے انکے اعمال کا احاطہ کر رکھا ہے

If a good befalls you, it grieves them, but if some evil overtakes you, they rejoice at it. But if you remain patient and become Al-Muttaqun (the pious - see V. 2:2), not the least harm will their cunning do to you. Surely, Allah surrounds all that they do.

यदि तुम्हारा कोई भला होता है तो उन्हें बुरा लगता है। परन्तु यदि तुम्हें कोई अप्रिय बात पेश आती है तो उससे वे प्रसन्न हो जाते है। यदि तुमने धैर्य से

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

काम लिया और (अल्लाह का) डर रखा,

तो उनकी कोई चाल तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। जो कुछ वे कर रहे हैं, अल्लाह में ने उसे अपने धेरे में ले रखा है

যদি শুভ কিছু তোমাদের জন্য ঘটে তবে সেটা তাদের দুঃখ দেয়, আর যদি মন্দ কিছু তোমাদের পাকড়াও তবে তাতে তারা হয় পরমানন্দিত। <u>আর যদি তোমরা ধৈর্যশীল ও ধর্মপরায়ণ হও তবে তাদের ষড়যন্ত্র তোমাদের এতটুকু ক্ষতি করবে না। নিঃসন্দেহ তারা যা করছে তা আল্লাহ্ ঘিরে রয়েছেন।</u>



○■---মানবগোষ্ঠী হচ্ছে একই জাতি।
কাজেই আল্লাহ্[ৣ] উত্থাপন করলেন
নবীদের সুসংবাদদাতারূপে এবং

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

र्हा समुदाय थे (उन्होंने विभेद किया) तो
अल्लाहॐ ने नबियों को भेजा, जो ---Mankind were one Community
and Allahॐ sent Prophets with
Glad Tidings and
Warnings,○■○■○■○■○■

Al-Baqara (2:213)

كَانَ ٱلنَّاسُ أُمَّةً وَحَدَّةً فَيَعَثَ ٱللهُ ٱلنَّبِيَّ-نَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنزَلَ مَعَهُمُ ٱلْكِتَّبَ وَمَا اَخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا ٱلذِينَ أُوتُوهُ مِن بَعْدِ مَا جَآءَتُهُمُ ٱلبَيِّنَتُ بَعْيًّا بَيْنَهُمْ فَهَدَى ٱللهُ الذينَ ءَامَنُوا لِمَا أَخْتَلَقُوا فِيهِ مِنَ ٱلْحَقِ

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

باِدْنِهِۦ وَٱللهُ يَهْدِي مَن يَشَآءُ إِلَى صِرَطٍ مُسْتَقِيمٍ

دراصل لوگ ایک ہی گروہ تھے اللہ تعالیٰ نے نبیوں کو خوشخبریاں دینے اور ڈرانے والا بنا کر بھیجا اور ان کے ساتھ سچی کتابیں نازل فرمائیں، تاکہ لوگوں کے ہر اختلافی امر کا فیصلہ ہوجائے۔ اور صرف ان ہی لوگوں نے جنھیں کتاب دی گئی تھی، اپنے یاس دلائل آجکنے کے بعد آپس کے بغض وعناد کی وجہ سے اس میں اختلاف کیا اس لئے الله یاک نے ایمان و الوں کی اس اختلاف میں بھی حق کی طرف اپنی مشیئت سے رہبری کی اور الله جس کو چاہے سیدھی راہ کی طرف رہبری کرتا ہے

Mankind were one community and Allah sent

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

Prophets with glad tidings and warnings, and with them He sent the Scripture in truth to judge between people in matters wherein they differed. And only those to whom (the Scripture) was given differed concerning it after clear proofs had come unto them through hatred, one to another. Then Allah by His Leave guided those who believed to the truth of that wherein they differed. And Allah guides whom He wills to a Straight Path.

सारे मनुष्य एक ही समुदाय थे (उन्होंने विभेद किया) तो अल्लाह ने निबयों को

भेजा, जो शुभ-सूचना देनेवाले और डरानवाले थे; और उनके साथ हक़ पर आधारित किताब उतारी, ताकि लोगों में उन बातों का जिनमें वे विभेद कर रहे है, फ़ैसला कर दे। इसमें विभेद तो बस उन्हीं लोगों ने,

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

जिन्हें वह मिली थी, परस्पर ज़्यादती करने के लिए इसके पश्चात किया, जबिक खुली निशानियाँ उनके पास आ चुकी थी। अतः ईमानवालों को अल्लाह ने अपनी अनूज्ञा से उस सत्य के विषय में मार्गदर्शन किया, जिसमें उन्होंने विभेद किया था। अल्लाह जिसे चाहता है, सीधे मार्ग पर चलाता है

মানবগোষ্ঠী হচ্ছে একই জাতি। কাজেই আল্লাহ্ উত্থাপন করলেন নবীদের সুসংবাদদাতারূপে এবং সতর্ককারীরূপে,

<u>আরি</u> তাঁদের সঙ্গে তিনি অবতারণ করেছিলেন কিতাব সত্যতার সাথে যাতে তা মীমাংসা করতে পারে লোকদের মধ্যে যে-বিষয়ে তারা মতবিরোধ করত। আর কেউ এতে মতবিরোধ করে না তারা ছাড়া যাদের এ দেয়া হয়েছিল তাদের কাছে স্পষ্ট প্রমাণ আসার পরেও তাদের পরস্পরের মধ্যে বিদ্রোহাচরণ বশতঃ। তাই যারা ঈমান এনেছে, আল্লাহ্[∰] তাদের হেদায়ত করলেন আপন

///...Al-Hajj (22:78)

এখতিয়ারে সেই সত্যতে যে বিষয়ে তারা মতবিরোধ করছিল। আর আল্লাহ্ যাকে ইচ্ছে করেন তাকে সহজ-সঠিক পথের দিকে পরিচালিত করেন।

Al-Bagara (2:176)

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

َذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللهَ نَرُّلَ ٱلْكُتَّبُ بِٱلْحَقِّ وَإِنَّ ٱلَّذِينَ أَخْتَلَقُواْ فِي ٱلْكِتَّبِ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ

ان عذابوں کا باعث یہی ہے کہ الله تعالیٰ نے سچی کتاب اتاری اور اس کتاب میں اختلاف کرنے والے یقیناً دور کے خلاف میں ہیں

That is because Allah has sent down the Book (the Quran) in truth. And verily, those who disputed as regards the Book are far away in opposition.

वह (यातना) इसलिए होगी कि अल्लाह के ने तो हक़ के साथ किताब उतारी, किन्तु जिन लोगों ने किताब के मामले में विभेद किया वे हठ

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

और विरोध में बहुत दूर निकल गए

তা_ই/ কারণ আল্লাহ্ গ্রন্থ প্রানা নাযিল করেছেন সত্যের সাথে। আর যারা গ্রন্থখানার মতবিরোধ করে তারা নিঃসন্দেহ একগুঁয়েমিতে বহুদূর পৌঁছেছে

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

because of mutual envy



Al-Jaathiya (45:17)

بس<u>االلهم</u> الرحمن الرحيم

وَءَاتَيْنَهُم بَيِّنَتٍ مِّنَ ٱلْأُمَّرِ فَمَا ٱخْتَلَقُوٓا إِلَا مِنَ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ ٱلْعِلْمُ بَعْيًّا بَيْنَهُمْ إِنَّ رَبِّكَ يَقْضِى بَيْنَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيْمَةِ فِيمَا كَاثُواُ فِيهِ يَخْتَلِقُونَ

اور ہم نے انہیں دین کی صاف صاف دلیلیں دیں، پھر انہوں نے اپنے پاس علم کے پہنچ جانے کے بعد آپس کی ضد بحث سے ہی اختلاف برپا کر ڈالا، یہ جن جن چیزوں میں اختلاف کر رہے ہیں ان کا فیصلہ قیامت والے دن ان کے درمیان (خود) تیرا رب کرے گا

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

And gave them clear proofs in matters [by revealing to them the Taurat (Torah)]. And they differed not until after the knowledge came to them, through envy among themselves. Verily, Your Lord will judge between them on the Day of Resurrection about that wherein they used to differ.

और हमने उन्हें इस मामले के विषय में स्पष्ट निशानियाँ प्रदान कीं। फिर जो भी विभेद उन्होंने किया, वह इसके पश्चात ही किया कि उनके पास ज्ञान आ चुका था और इस कारण कि वे परस्पर एक दूसरे पर ज़्यादती करना चाहते थे। निश्चय ही तुम्हारा रबव्या कि कियामत के दिन उनके बीच उन चीज़ों के बारे में फ़ैसला कर देगा, जिनमें वे परस्पर विभेद करते रहे है

আর আমরা তাদের দিয়েছিলাম বিষয়টি সন্বন্ধে সুস্পষ্ট প্রমাণাবলী, কিন্ত তাদের কাছে জ্ঞান

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78)

আসার পরেও তারা মতভেদ করে নি নিজেদের মধ্যে ঈর্ষা বিদ্বেষ ব্যতীত।

নিঃসন্দেহ তোমার প্রভুর্ঝা তাদের মধ্যে কিয়ামতের দিনে বিচার-মীমাংসা করে দেবেন যে বিষয়ে তারা মতভেদ করত সে-সন্বন্ধে।



○■○-----তাদের বেশির ভাগ
গোপন পরামর্শে ভালো কিছু নেই

তার----जनकी अधिकतर

काना-फूसियों में कोई भलाई नहीं
होती। हाँ,○There is no Good in
most of their Najwa.....

An-Nisaa (4:114)

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

بس<u>اراللهم</u> الرجمان الرجيمان

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن تَجْوَلِهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إصْلَحٍ بَيْنَ ٱلنَّاسِ وَمَن يَقْعَلْ دَلِكَ ٱبْتِعَآءَ مَرْضَاتٌ ٱللهِ فَسَوْفَ ثُوْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا

،ان کے اکثر خفیہ مشوروں میں کوئی خیر نہیں بھلائی اس کے مشورے میں ہے جو خیرات /ہاں کا یا نیک بات کا یا لوگوں میں صلح کرانے کا حکم کرے اور جو شخص صرف الله تعالیٰ کی رضامندی حاصل کرنے کے ارادے سے یہ کام کرے اسے ہم یقینا بہت بڑا ثواب دیں گے

There is no good in most of their secret talks save (in) him who orders Sadaqah (charity in Allah's Cause), or Ma'ruf (Islamic Monotheism and all the good and righteous deeds which Allah has ordained), or conciliation between mankind, and he who does this, seeking the good Pleasure of Allah, We shall give

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

him a great reward.

उनकी अधिकतर काना-फूसियों में कोई

भलाई नहीं होती। हाँ, जो व्यक्ति सदका देने या भलाई करने या लोगों के बीच सुधार के लिए कुछ कहे, तो उसकी बात और है। और जो कोई यह काम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए करेगा, उसे हम निश्चय ही बड़ा प्रतिदान प्रदान करेंगे

An-Nisaa (4:113)

তাদের বেশির ভাগ গোপন পরামর্শে ভালো কিছু নেই তার ক্ষেত্রে ছাড়া যে নির্দেশ দেয় দানখয়রাতের অথবা শুভকাজের অথবা মানুষের মাঝে শান্তি প্রতিষ্ঠার। আর যে কেউ এরকম করে আল্লাহ্র সন্তণ্টি কামনা করে, তাহলে তাকে আমরা দেবো বিরাট পুরস্কার।

///...Al-Hajj (22:78)

Shared using Quran App https://the-quran.app/r/4/113

আর যে কেউ রসূলের বিরুদ্ধাচরণ করে পথনির্দেশ তার কাছে সুস্পষ্ট হবার পরে, আর অনুসরণ করে মূমিনদের পথ থেকে ভিন্ন, আমরা তাকে ফেরাবো সেই দিকে যে দিকে সে ফিরেছে, আর তাকে প্রবেশ করাবো জাহান্নামে, আর মন্দ সেই গন্তব্যস্থান/

○ ○ ○ - ि विश्वांत्र श्वांत्र करता

আल्लाइ उ उँ तंत्र तंत्र उ किंठार या जिति तांशिल करतिष्ठत उँ तं विष्ठ गंवाही देते हुए

इनसाफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो,

चाहे वह---- O you who believe! Stand

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

out firmly for justice, as witnesses to Allah, ■○■○■

An-Nisaa (4:135) بسراللهم اللاجهون

يَّأَيُّهَا الذِينَ ءَامَنُوا كُوثُوا قُوْمِينَ بِٱلقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلهِ وَلَوْ عَلَى أَنفُسِكُمْ أَوْ الْوَلِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ إِن يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا فَاللهُ وَالْكُلُولِيْ اللهَ وَاللهُ تَعْدِلُوا وَإِن لَوْءَا أَوْ تَعْدِلُوا وَإِن لَوْءَا أَوْ تَعْدِلُوا وَإِن لَكُونَ لَهُ اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ لَلهُ اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ لَكُوبًا اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ لَكُوبًا اللهَ اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ لَمُ اللهَ اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ لَكُوبًا اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ فَإِن اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ فَإِن اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ لَكُوبًا اللهَ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ ال

عدل وانصاف پر مضبوطی سے جم ااے ایمان والو جانے والے اور خوشنودی مولا کے لئے سچی گواہی گو وہ خود تمہارے اپنے خلاف ہو ،دینے والے بن جاؤ وہ ،یا اپنے ماں باپ کے یا رشتہ دار عزیزوں کے شخص اگر امیر ہو تو اور فقیر ہو تو دونوں کے اس لئے تم خواہش نفس ،ساتھ الله کو زیادہ تعلق ہے

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

کے پیچھے پڑ کر انصاف نہ چھوڑ دینا اور اگر تم نے کج بیانی یا پہلو تہی کی تو جان لو کہ جو کچھ تم کرو گے الله تعالیٰ اس سے پوری طرح باخبر ہے

O you who believe! Stand out firmly for justice, as witnesses to Allah, even though it be against yourselves, or your parents, or your kin, be he rich or poor, Allah is a Better Protector to both (than you). So follow not the lusts (of your hearts), lest you may avoid justice, and if you distort your witness or refuse to give it, verily, Allah is Ever Well-Acquainted with what you do.

ऐ ईमान लानेवालों अल्लाह के लिए गवाही देते हुए इनसाफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहों,

चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने या माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो। कोई धनवान हो या निर्धन (जिसके विरुद्ध तुम्हें गवाही देनी पड़े) अल्लाह

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

को उनसे (तुमसे कहीं बढ़कर) निकटता का सम्बन्ध है, तो तुम अपनी इच्छा के अनुपालन में न्याय से न हटो, क्योंकि यदि तुम हेर-फेर करोगे या कतराओगे, तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर रहेगी

ওহে যারা ঈমান এনেছ/ বিশ্বাস স্থাপন করো আল্লাহ্তে ও তাঁর রসূলে, ও কিতাবে যা তিনি নাযিল করেছেন তাঁর রসূলের কাছে, আর যে গ্রন্থ তিনি অবতারণ করেছিলেন এর আগে। আর যে কেউ অবিশ্বাস করে আল্লাহ্তে ও তাঁর ফিরিশ্তাগণে, ও তাঁর কিতাবসমূহে ও তাঁর রসূলগণে, ও আখেরাতের দিনে, — সে তাহলে নিশ্চয়ই চলে গেছে সুদূর বিপথে।



<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

,,,,,,,,,,,,,,

দেখো নি যাদের কিতাবের কিছু অংশ দেওয়া হয়েছিল, যারা বিশ্বাস <u>করে তন্ত্রমন্ত্রে ও তাগুতে___</u>क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिय् गया? वे अवास्तविक चीज़ो और ताग़्त (बढ़ हुए सरकश) को मानते है---- <u>Jibt and</u>



An-Nisaa (4:51)

الذينَ أوتوا تصِيبًا مِّنَ الكِتَّ مِنُونَ بِٱلجِبْتِ وَٱلطَّعُوتِ وَيَقُولُونَ لِلذِينَ كَفَرُوا ۚ هَٰٓؤُلَآءِ أَهْدَى ٰ مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ْ سَبِي

तुम्हारे बाप इबराहीम के पंथ को तुम्हारे लिए पसन्द किया। उसने इससे पहले तुम्हारा नाम मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा था और इस ध्येय से - ताकि रसुल तुमपर गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह हो। अतः नमाज का आयोजन करो और ज़कात <u>दो और अल्लाह को मज़बूती से पकडे रहो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो क्या ही </u> <u>अच्छा संरक्षक है और क्या ही अच्छा सहायक!///..... লেখক--भिक्क ्बाऊलाना मुद्दी</u> फंडे,चेमबाडी, तिरपति,++ जकातमंगखा रायाचोटवी++जिद्दीकासमीमाजुसी कृत्ता पेटा, **मदनपल्लाए**,......3ThreeMurty..Andhere Bandre Hendre Qasmis..పೆಜ್ರೆ:143

.....

کیا آپ نے انہیں نہیں دیکھا جنہیں کتاب کا کچھ حصہ ملا؟ جو بت کا اور باطل معبود کا اعتقاد رکھتے ہیں اور کافروں کے حق میں کہتے ہیں کہ یہ لوگ ایمان والوں سے زیادہ راہ راست پر ہیں

Have you not seen those who were given a portion of the Scripture? They believe in Jibt and Taghut and say to the disbelievers that they are better guided as regards the way than the believers (Muslims).

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिय् गया? वे अवास्तविक चीज़ो और ताग़ूत (बढ़ हुए सरकश) को मानते है। और अधर्मियों के विषय में कहते है, "ये ईमानवालों से बढ़कर मार्ग पर है।"

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

তুমি কি তাদের কথা ভেবে দেখো নি যাদের কিতাবের কিছু অংশ দেওয়া হয়েছিল, যারা বিশ্বাস করে তন্ত্রমন্ত্রে ও

<u>তাঁগুতে,</u> আর যারা অবিশ্বাস পোষণ করে তাদের সন্বন্ধে যারা বলে -- 'যারা ঈমান এনেছে তাদের চাইতে এরাই পথে অধিকতর সুপথগামী?''

------ तिः जत्म्वर् याता जिविश्वाज (शिष्ठण कर्ति जाल्लाङ् ७ ठाँत तजुलगंदा, जात याता जाल्लाङ् ७ ठाँत तजुलप्तत प्राया श्री विकार कर्ति जात जाता वर्ति विकार कर्ति जात जाता वर्ति विकार जोता वर्ति वर

रसूलों का इनकार करते है और चाहते है कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच विच्छेद करें, और कहते है कि 'हम कुछ

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

को मानते है----Those Who

<u>Differentiate Between Allah and</u>

His Messengers Oloro o

An-Nisaa (4:150)
بسرالله م

إِنَّ ٱلذِينَ يَكَفُرُونَ بِٱللَّهِ ۗ وَرُسُلِهِ ۗ وَيَوْدُونَ ثَوْمِنُ أَللّهِ وَرُسُلِهِ ۗ وَيَقُولُونَ ثَوْمِنُ لِنَ يُتَخِدُواْ بِبَعْضِ وَيُرِيدُونَ أَن يَتَخِدُواْ بِبَعْضِ وَيُرِيدُونَ أَن يَتَخِدُواْ بِبَعْضِ وَيُرِيدُونَ أَن يَتَخِدُواْ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا

جو لوگ الله کے ساتھ اور اس کے پیغمبروں کے ساتھ کفر کرتے ہیں اور جو لوگ یہ چاہتے ہیں کہ الله اور اس کے رسولوں کے درمیان فرق رکھیں اور جو لوگ کہتے ہیں کہ بعض نبیوں پر تو ہمارا ایمان ہے اور بعض پر نہیں اور چاہتے ہیں کہ اس کے اور اس کے

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

بین بین کوئی راه نکالیں

Verily, those who disbelieve in Allah and His Messengers and wish to make distinction between Allah and His Messengers (by believing in Allah and disbelieving in His Messengers) saying, "We believe in some but reject others," and wish to adopt a way in between.

जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इनकार करते है और चाहते है कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच विच्छेद करें, और कहते है कि 'हम कुछ को मानते है और कुछ को नहीं मानते" और इस तरह वे चाहते है कि बीच की कोई राह अपनाएँ;

নিঃসন্দেহ যারা অবিশ্বাস পোষণ করে

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

আল্লাহ্তে ও তাঁর রসূলগণে, আর যারা আল্লাহ্ ও তাঁর রসূলদের মধ্যে পার্থক্য করতে চায়, আর তারা বলে - আমরা ঈমান আনি কয়েকজনের প্রতি আর অস্বীকার করি কয়েকজনকে, আর যারা চায় ওর মধ্যে একটি পথ নিতে, --

এরা নিজেরাই হচ্ছে প্রকৃত অবিশ্বাসী, আর আমরা অবিশ্বাসীদের জন্য তৈরি করেছি লাঞ্জনাদায়ক শাস্তি।





An-Nisaa (4:151)

بسلالهم مسلمتمم ۱۲۱۵ - منتا الکافرور در ۱۳۵۰ الکافرور در ۱۳۵۰ الکافرور در در ۱۳۵۰ الکافرور در ۱۳

أُولَّئِكَ هُمُ ٱلكَفِرُونَ حَقًا وَأَعْتَدْتَا لِلكَفِرِينَ

عَدَابًا مُهِينًا

،یقین مانو کہ یہ سب لوگ اصلی کافر ہیں اور کافروں کے لئے ہم نے اہانت آمیز سزا تیار کر رکھی ہے

They are in truth disbelievers. And We have prepared for the disbelievers a humiliating torment.

वही लोग पक्के इनकार करनेवाले है और हमने इनकार करनेवालों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है

আর যারা ঈমান আনে আল্লাহ্তে ও তাঁর রসূলগণে, আর তাঁদের কোনো একজনের মধ্যেও পার্থক্য করে না; এরাই -- এদের পুরস্কার শীঘ্রই এদের দেয়া হবে। আর আল্লাহ্ হচ্ছেন পরিত্রাণকারী, অফুরন্ত ফলদাতা।

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>



<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

بس<u>االلهم</u> اللحمن ملاحمه

وَقَدْ نَرُّلَ عَلَيْكُمْ فِي ٱلْكُنِّتَٰبِ أَنْ إِدَا سَمِعْتُمْ عَالِمَ اللهِ يُكُفَّرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا قُلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ - مَعَهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ - مَعَهُمْ إِنَّ ٱللهَ جَامِعُ ٱلمُنْفِقِينَ إِلَّهُ جَامِعُ ٱلمُنْفِقِينَ وَلَيُعُمْ إِنَّ ٱللهَ جَامِعُ ٱلمُنْفِقِينَ وَلَيُعُورِينَ فِي جَهَنَمَ جَمِيعًا وَٱلكَفِرِينَ فِي جَهَنَمَ جَمِيعًا

اور الله تعالیٰ تمہارے پاس اپنی کتاب میں یہ حکم اتار چکا ہے کہ تم جب کسی مجلس والوں کو الله تعالیٰ کی آیتوں کے ساتھ کفر کرتے اور مذاق اڑاتے ہوئے سنو تو جب /اس مجمع میں ان کے ساتھ نہ بیٹھو تک کہ وہ اس کے علاوہ اور باتیں نہ کرنے تم بھی اس وقت انہی جیسے (ورنہ) ،لگیں یقینا الله تعالیٰ تمام کافروں اور سب ،ہو منافقوں کو جہنم میں جمع کرنے والا ہے منافقوں کو جہنم میں جمع کرنے والا ہے

And it has already been revealed to you in the Book (this Quran) that when you hear the Verses of Allah

///...Al-Hajj (22:78)

being denied and mocked at, then sit not with them, until they engage in a talk other than that; (but if you stayed with them) certainly in that case you would be like them. Surely, Allah will collect the hypocrites and disbelievers all together in Hell,

वह किताब में तुमपर यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इनकार किया जा रहा है और उसका उपहास किया जा रहा है, तो जब तब वे किसी दूसरी बात में न लगा जाएँ, उनके साथ न बैठो, अन्यथा तुम भी उन्हीं के जैसे होगे; निश्चय ही अल्लाह कपटाचारियों और इनकार करनेवालों - सबको जहन्नम में एकत्र करनेवाला है An-Nisaa (4:)

আর নিশ্চয়ই তোমাদের কাছে তিনি কিতাবে নাযিল করেছেন যে **যখন তোমরা শোনো**

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

আল্লাহ্র আয়াতসমূহ অবিশ্বাস করা হচ্ছে ও সেগুলোকে বিদ্রূপ করা হচ্ছে তথন তাদের সঙ্গে বসে থেকো না যে পর্যন্ত না তারা অন্য কোনো প্রসঙ্গে প্রবেশ করে, নিঃসন্দেহ তাহলে তোমরাও তাদের মতো হবে। নিঃসন্দেহ আল্লাহ্ মূনাফিকদের ও অবিশ্বাসীদের সম্মিলিতভাবে একত্রিত করতে যাচ্ছেন জাহান্নামে,

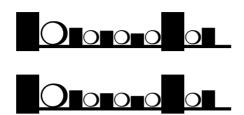
যারা প্রতীক্ষায় থাকে তোমাদের জন্য, তারপর যদি আল্লাহ্র কাছ থেকে তোমাদের বিজয় লাভ হয় তবে তারা বলে — "আমরা কি তোমাদের সঙ্গে ছিলাম না?" আর যদি অবিশ্বাসীদের জন্য ভাগ পড়ে তবে তারা বলে — "আমরা কি তোমাদের উপরে আধিপত্য রাখি নি এবং মূমিনদের থেকে তোমাদের রক্ষা করি নি?" সেজন্য আল্লাহ্ কিয়ামতের দিন তোমাদের মধ্যে বিচার করবেন। আর আল্লাহ্ কখনো অবিশ্বাসীদের মূমিনদের

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

WWWWWWW

,,,,,,,,,,,,,,,,,

উপরে পথ করে দেবেন না।



<u>Heavenly Software vs</u> <u>Deluded Corrupt Software.</u>

Subject	QURANIC	Others'CorruptBuzRo
s of	Software used by	uguey Software Not
Deviati	Momins	FoundIn AlQuran//
on		Saheeh Hadith
Deen	Islam:	Barely, Devpandy.
	***	Sheeyi,Rafidy,Kharijy,Jehemy,
	**Ar-Ra'd (13:14)	Qadiyany,Chisty,Suhrawardy,Ba
	بس <u>االله</u> م مالرجيمون مالرجيمون	haai,Mehdawy,Qadry,Padry,Gan
	له دعوة ألحق	gohy,Zakriyayi and a host of
	وَٱلَّذِينَ يَدْعُونَ مِن	names totalling 72And

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

دُونِهِ۔ لا

يَسْتَجِيبُونَ لَهُم شَىْء إلا كَبْسِطِ كَتَّهُ الله الْلَّهِ الْلَّهِ اللهِ الْلَّهِ الْلَّهِ اللهِ الْلَّهِ الْلَّهِ الْلَّهِ الْلَّهِ الْلَّهِ الْل

كَفَيْهِ إِلَى الْمَاءِ

لِيَبْلُغُ فَاهُ وَمَا هُوَ

بِبِلِغِهِ۔ وَمَا دُعَاءُ

ألكفرينَ إلا في

ضَلْلِ

اسی کو پکارنا حق ہے۔
جو لوگ اوروں کو اس
کے سوا پکارتے ہیں وہ
کا کچھ (کی پکار) ان
بھی جواب نہیں دیتے
مگر جیسے کوئی
شخص اپنے دونوں ہاتھ
پانی کی طرف پھیلائے
ہوئے ہو کہ اس کے
ہوئے ہو کہ اس کے
منھ میں پڑ جائے
حالانکہ وہ پانی اس

Every girohy_group thinks
that they are theTrue
Mislems***they have
supportive

Taweels,Ahadis,Buzrougue

Aqwaale Zarreena,*

wait until it is

Qiyamah *****

* * * * * * * * Aal-i-Imraan (3:85)

وَمَن يَبْتَغ غَيْرَ ٱلْإِسْلُم دِينًا فُلْن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي

الْءَاخِرَةِ مِنَ ٱلخُسِرِينَ

جو شخص اسلام کے سوا اور دین تلاش اس کا دین ،کرے قبول نہ کیا جائے گا اور وہ آخرت میں

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

کے منھ میں پہنچنے ان منكروں ،والا نہيں کی جتنی پکار ہے سب گمراہی میں ہے For Him (Alone) is the Word of Truth (i.e. none has the right to be worshipped but He). And those whom they (polytheists and disbelievers) invoke. answer them no more than one who stretches forth his hand (at the edge of a deep well) for water to reach his mouth, but it reaches him not. and the invocation of the disbelievers is nothing

نقصان یانے والوں میں ہوگا And whoever seeks a religion other than Islam, it will never be accepted of him, and in the Hereafter he will be one of the losers. *** **\$**As-Saff (61:7) وَمَنْ أَظْلُمُ مِمِّنِ اقْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الكذب وَهُوَ يُدْعَىٰ َ الإسلم وآللهُ لا يَهْدِي الْقَوْمَ الظلِمِينَ اس شخص سے زیادہ ظالم اور کون ہوگا جو (افترا) الله پر جھوٹ

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

	but an error (i.e. of no	باندھے حالانکہ وہ اسلا
	use).	م کی طرف بلایا جاتا
		ہے اور الله ایسے
		ظالموں کو ہدایت نہیں
		کرتا
		And who does more
		wrong than the one who
		invents a lie against
		Allah, while he is being
		invited to Islam? And
		Allah guides not the
		people who are Zalimun
		(polytheists,
		Tomb_Mausauolia
		Devoted,,
		wrong-doers and
		dis/misbelievers) folk.

Allaahu. 🕮	Allaahu 🖖 +	Khuda

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

MINIMUM TO THE PARTY OF THE PAR

	Asmaaul Husnaa as described by Allaahu [∰] ,HimSelf.	Parwardigar Dev
Rasool/Rusul/ Nabiy/Anbiya	Rasool/ Rusul/	Paigamber, Kamliwale,
	Anbiya	AanHazrat, Ya Muhammad etc
NAFL PRAYERS	NAFL	SUNNAT???
Prayers	Assalaah/Salah	Nimoz/ Namaz/Nemoz,etc
Fasting	AsSaum/Saum	Roza
SAHEER	SAHEER	SAIRY
IFTAAR	IFTAAR	ROZA KHOLNA
QURAN	READ COMPLETE QURAN IN EVERY LUNAR MONTH COME WHAT MAY	NEGLECTED, RELRGATED, DASTAR DLYVERY FEW TAKERS 2.INSTEAD OTHER BUROUGUEY WRITINGS ARE PREFERRED .eg. Fadaaele Aamaal read by many Assiduously dedicatedly even in Mosques 3COMMERCIAL QURAN KHWANY by aayaat trading

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

.....

		Ullemmas
		jhoolaajuhalaa.neem hakeem Khatar e
• • •		Jaan, Harfan mullaas,
• • •		4comercial Shaitany Amaliyat like
		FALEETEY
		,GANDEY,GUNDEY,kundey ,mundey,andey,bandey,
Qirath	Qiraathu_l_quran	guran
	0	khwany,padhnaa,Gu
		rbaany,
Abd	Abd,	Banda,Ashraful
	abdullaahi	Makhlooqat
Greetings+ Salutations on	Assalaatu	1_Darod ,Darood,Salam.
prophets	waSalaamu	2_SHIRKIA EKKE EKKE
	AlanNabiyyi.	THEORY/.Ardh Par Maula
	NABI IS AN ABD	_Ardh par
	+ RAsOOL	MAULA_Magianfabrications
		3-celebrating Chritmas with
		Christian biradary ,claiming tha
		Christian also
		are entitled to Jannah.
Paradise/Heav en/Eden	Jannah//Adan/Haya	Behest,BAGH,FIRD

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

WWWWWW

	wan/	AUS
Hell	Jahannam, Saeer, HA	DoZakh, Narakh
	AWIYA	
Death	MAUT,mayyat,Kafa	Additionally Traditionals. murda, Qabristan, Dargah, Barsy, Dasw
	n, Dafan, Marqad, Qa	y,Barahey,Gyarhwy_Gyaramy,Chehal lum,Fateha,Qurankhwany,
	bar,Ziyarah,	Murda Sherif ,BurdaSherief,Baxshis,Urs e
	No barsy,no	Shetief,Sandal,Chiragan,Juloos,Tabarr ak,+many more innovations ++++++
	marcia, No	
	mankabat, No	
	anniversaries,	
Marriage	Nikaah,Aroos,Aroosa	Shaadi,Biyaa, Shaadmaany,
	,Jowj,Jowjah,Wasl,	Nausha, Dulha, Dulhan, Khusr, Khusroe, Damaad, Bahu, Bhau,
TITLES: MAULAANA	ALLAAHU.IS THE	EVERYlame_ ALEM IS A MAULANA,THE NAMES AND
\mathcal{A}	ONLY	ADJECTIVES OF ALLAAHU CANNOT BE USED FOR OTHERS.
	MAULAANAA	
CELRBRATI ONSANNIV	No Birth	BARSY/MARCIE/MANKABA/URS/AR AS/ARAASH/
ERSARIES	/Death/Marriage	MILAD,MAULOOD,JULOOS,ALLTYP ES OF CELEBRATIONS BOND THE
	anniversaries, No	GUUNGA Ghoomnaa_Jhoomnaa Tehzeeby Tamaddany
	ehtefaalaat	Luknowy_Akbary.Selfesteemed Soofy maasharah, of maasseslames

<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

MINIMINI I

FESTIVAL GREETINGS	TAQABBALALLAAH	C33
	U MINNAA WA	MUBARAK-+3_maa
	MINKUM +	r GulMil-HUG
	Musaafaa+ ONE HUG	
Qutb/Aqtab_ wahmy	Mumins believe in	Baatil_Delusionist
delusion	Allaahu. [∰] . only	Renegade forces believe
	buzrougues are	that their selected Dead
	dispensable stuff	entombed Buzrougues are
	* * * * * * * * *	holding the Earth
	ជា ជា ជា ជា ជា	WhereAs the Truth is :
	بسرالله :Faatir (35:41)	* * * * * * * * *
	إنّ اللهَ يُمْسِكُ	* *
	ٱلسَّمُّوٰتِ وَٱلأَرْضَ أَن	Faatir (35:22)
	تزول وَلئِن زالتا إنْ	بس <u>ارالله مي</u> مالليجيفون مالليجيفون
	أمْستكهُما مِنْ أَحَدِ	وَمَا يَسْتَوِي ٱللَّحْيَاءُ
	مِن بَعْدِهِ ٓ إِنَّهُۥ كَانَ	وَلَا ٱلْأَمْوَٰتُ إِنَّ ٱللَّهَ
	حَلِيمًا عَقُورًا	يُسْمِعُ مَن يَشَآءُ وَمَآ
	یقینی بات ہے کہ الله	أنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي
	تعالیٰ آسمانوں اور	ٱلقبُور
•		

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:<u>78</u>)

زمین کو تھامے ہوئے ہے کہ وہ ٹل نہ سوا اور کوئی ان کو اتھام بھی نہیں سکتا۔ وہ حلیم غفور ہے Verily! Allah grasps the heavens and the earth lest they move away from their places, and if they were to move away from their places, there is not one that could grasp them after Him. Truly, He is Ever Most Forbearing, OftForgiving.

اور زندہ اور مردے ،برابر نہیں ہوسکتے الله تعالیٰ جس کو اجائیں اور اگر وہ ٹل ،چاہتا ہے سنا دیتا ہے|جائیں تو پھر الله کے اور آپ ان لوگوں کو نہیں سنا سکتے جو قبروں میں ہیں Nor are (alike) the living (believers) and the dead (disbelievers). Verily, Allah makes whom He will hear, but you cannot make hear those who are in graves.

///...Al-Hajj (22:78)

तुम्हारे बाप इबराहीम के पंथ को तुम्हारे लिए पसन्द किया। उसने इससे पहले तुम्हारा नाम मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा था और इस ध्येय से - ताकि रसूल तुमपर <u>गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह हो। अतः नमाज़ का आयोजन करो और ज़कात</u>् <u>दो और अल्लाह को मज़बूती से पकडे रहो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो क्या ही </u> <u>अच्छा संरक्षक है और क्या ही अच्छा सहायक!///..... লেখক--भिक्क ्रबाऊलाना मुट्टी</u> <u>फंडे,चेमबाडी, तिरपति,++ जकातमंगखा रायाचोटवी++जिद्दीकासमीमाजुसी कृत्ता पेटा,</u> **मदनपल्लाए,......**3ThreeMurty..Andhere Bandre Hendre Qasmis..పೆಜ್ರೆ:162

waly	Momins believe in
	Allahu's commands
	* * * * * * * * *
	*
	Al-Anfaal (8:40)
	بس <u>الله</u> م الرحيم الرحيم
	وَإِن تُولُوا ْ فُأَعْلُمُوٓا ْ
	أَنَّ ٱللَّهُ مَوْلَنَّكُمْ
	نِعْمَ ٱلْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ
	ٱلتصير
	اور اگر روگردانی
	کریں تو یقین رکھیں
	کہ الله تعالیٰ تمہارا
	کار ساز ہے وہ بہت
	اچھا کار ساز ہے اور
	بہت اچھا مدد گار
	ہے
	And if they turn away,

Baatil_Delusionists believe That their selected Buzrougues are the Waly-s, who can bestow like what Allaghy bestows like health. wealh, children etc.. 📽 **\$**.Al-Bagara (2:257) ءَامَنُوا يُخْرِ

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

then know that

Allah is your Maula

(Patron, Lord,

Protector and

Supporter, etc.), (what)

an Excellent Maula,

and (what) an

Excellent Helper!

ٲؙۅؗؖٚڷڹڮ ٲڝ۠ڂڹ ٱڶٮٞٳڔ ۿمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ

ایمان لانے والوں کا كارساز الله تعالىٰ وہ انہیں ،خود ہے اندھیروں سے روشنی کی طرف نکال لے جاتا ہے اور کافروں کے اولیاء شیاطین ہیں۔ وہ انہیں روشنی سے نکال کر اندھیروں کی طرف یہ لوگ ،لے جاتے ہیں جہنمی ہیں جو ہمیشہ اسی میں پڑے رہیں گے Allah is the Wali (Protector or Guardian)

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

		of those who believe.
		He brings them out
		from darkness into
		light. But as for those
		who disbelieve, their
		Auliya (supporters and
		helpers) are Taghut
		[false deities and false
		leaders, etc.], they
		bring them out from
		light into darkness.
		Those are the dwellers
		of the Fire, and they
		will abide therein
		forever.
SUSTAINER, PROVIDER,	ALLAAHU [®] .IS	Baatil_Delusionists
DATA,KAAS HIF,GUNJB	THE ONLY	believe THAT LONG
AKSH,MUSH KIL	RAZZAAQ	DEAD RAMEEM +
		<mark>///Al-Hajj_(22:78)</mark>

<u>..... तुम्हारे बाप इबराहीम के पंथ को तुम्हारे लिए पसन्द किया। उसने इससे पहले</u> तुम्हारा नाम मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा था और इस ध्येय से - ताकि रसुल तुमपर <u>गवाह हो और तम लोगों पर गवाह हो। अतः नमाज़ का आयोजन करो और ज़कात</u> दो और अल्लाह को मज़बूती से पकड़े रहो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो क्या ही अच्छा संरक्षक है और क्या ही अच्छा सहायक!///..... লেখক--भिक्क बाऊलाना मुद्री फंडे,चेमबाडी, तिरपति,++ जकातमंगखा रायाचोटवी++जिद्दीकासमीमाजुसी कृत्ता पेटा, मदनपल्लाए,......3ThreeMurty..Andhere Bandre Hendre Qasmis..పేజీ,:165

KUSHA,etc...
a longlist of
Longing
AdhesiveAdhe
rents.....of
Dead
Buzrougues...

* * * * * * * *

* Ar-Ra'd (13:14)

لهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن

دُونِهِ۔ لا

يَسْتَجِيبُونَ لَهُم

بشَىْءِ إِلَّا كَبُّسِطِ

كَفَيْهِ إِلَى الْمَآءِ

لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ

بِبَلِغِهِ۔ وَمَا دُعَاءُ

ٱلكفرينَ إلَّا فِي

ضَلْل

اسی کو پکارنا حق ہے۔ جو لوگ اوروں کو اس کے سوا پکارتے ہیں وہ ان کا کچھ (کی پکار) بھی جواب نہیں RUFAATH
MARQADY
BUZROUGUES
HELP THEM IF
INVOKED..

بسارالله على المارة An-Nahl (16:20)

وَٱلَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْـًا

وَهُمْ يُخْلَقُون

اور جن جن کو یہ لوگ الله تعالیٰ کے سوا پکارتے ہیں وہ کسی چیز کو پیدا بلکہ ،نہیں کرسکتے وہ خود پیدا کیے ہوئے ہیں Those whom they

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

دیتے مگر جیسے کوئی شخص اپنے دونوں ہاتھ یانی کی طرف پھیلائے ہوئے ہو کہ اس کے منھ میں پڑ جائے حالانکہ وہ یانی اس کے منھ میں پہنچنے والا ان منکروں کی ،نہیں جتنی پکار ہے سب گمراہی میں ہے For Him (Alone) is the Word of Truth (i.e. none has the right to be worshipped but He). And those whom they (polytheists and disbelievers) invoke, answer them

(Al-Mushrikun) invoke besides Allah have not created anything, but are themselves created * * * * * * * * * * * * * * * * 1-..Ajayameru wale Khwaja piya..of Taragadh fame 2-Banda Nawaz with his ever flowing GesuDaraaz, GulBerg, B ulgarbha, Halkatta fame 3-RehmatabAd-Kasu mur_Venaadu-Triad of Nellore Andhra Sheriefs

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78)

no more than one who stretches forth his hand (at the edge of a deep well) for water to reach his mouth, but it reaches him not, and the invocation of the disbelievers is nothing but an error (i.e. of no use).

4-Kovalam_Nagoor_ Tamil sherieffs+Tawakkalsha h, Tipu kannada sherifs of Mysore howdappa state. 5-Penugonda/..Penuko nda/Kazipet-1+Kajipet _2..Quartet of TeluguSherieffs 6.. Selam Chisti of Fatehpur Sikri-Of Jodhabai fame 7-Basti Nizamuddin, +++Khaky Bakhtiar/Bhakhtawaa

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

8-Bihar Sherieff

9-Mazhaar Sherief

Verily, Allah[®] is the All-Provider, Owner of Power, the Most Strong.

Lugman (31:20)

ألم تروا أن أله

ألسمّوات وما في

أَلْأَرْضِ وَأُسْبَعَ

عَلَيْكُمْ نِعَمَهُۥ ظهرَةً

وَبَاطِنَةً وَمِنَ

ٱلنَّاسِ مَن يُجُدِلُ

فِي اللهِ بِغَيْرِ عِلْم

وَلَا هُدًى وَلَا كِتَٰبٍ

مُنِيرٍ

کیا تم نہیں دیکھتے کہ الله تعالیٰ نے 10-Howdah sherief 11-Nanda Rushi sherif RASKHAN shetif 12_BulLeShah

sherief...

13_BARANE SHAH,UJALE

SHAH,KALEDHAH,B

HOKESHAH, QUTUB

SHAH, LANGARJOU

SHAH, Nampally

Shah, Misriganj Shah, S

hah Raju Kattal

Shah, Kulcharam

sheriff,

GAJEVELLI Yajda

Shohada12Shahs_Ba

da Pahad

shah, Pahadi Sherif

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

زمین وآسمان کی ہر
چیز کو ہمارے کام
میں لگا رکھا ہے اور
تمہیں اپنی ظاہری
وباطنی نعمتیں
بھرپور دے رکھی
بعض لوگ الله ،ہیں
کے بارے میں بغیر
علم کے اور بغیر
علم کے اور بغیر
ہدایت کے اور بغیر
روشن کتاب کے
جھگڑا کرتے ہیں

See you not (O men)

that Allah has

subjected for you

whatsoever is in the

heavens and

whatsoever is in the

Shah,Mir demon shaah Kamliwaleshah,Maulal i Shah,PunjeShah,Gand

eShah, Mundeshah,...sh
ah...shah...Barnardsha
h, MoisaRamShah,....++
++++
Har gali ,kooche
me ek shah,....
Like the weather
forecasts -the list of
buzrougues is never
ending....is ever
refreshablyupdateable..

13...Qutbul Aqtaab In North America. is the the latest additional

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

earth, and has completed and perfected His Graces upon you, (both) apparent (i.e. Islamic Monotheism, and the lawful pleasures of this world, including health, good looks, etc.) and hidden [i.e. One's Faith in Allah (of Islamic Monotheism) knowledge, wisdom, guidance for doing righteous deeds, and also the pleasures and delights of the Hereafter in Paradise, etc.]? Yet of mankind

edition ...as per my updated ignorant brawny brainy Cerebellum..

* * * * * *

Faatir (35:13) بسرالله

يُولِجُ ٱليّٰلَ فِي

ٱلنّهَارِ وَيُولِحُ ٱلنّهَارَ

فِي اليُّلِ وَسَخَرَ . السَّمْسِ وَالقَمَرَ كُلُّ السَّمْسِ وَالقَمَرَ كُلُّ

الشكس والعمر كل مُسمَّد .

دَلِكُمُ ٱللهُ رَبُكُمْ لَهُ

ألمُلكُ وَٱلذينَ

تدْعُونَ مِن دُونِهِ۔

مَا يَمْلِكُونَ مِن قطم،

قِطمِير

وه رات کو دن اور

<mark>///...Al-Hajj (</mark>22:78<mark>)</mark>

is he who disputes about Allah without knowledge or guidance or a Book giving light!

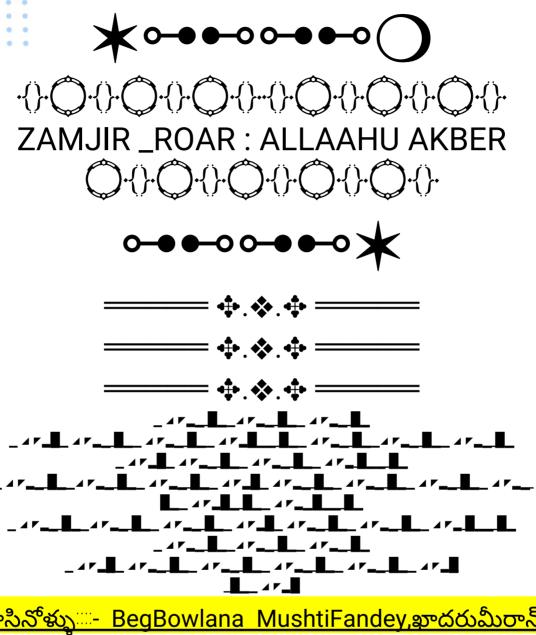
......

دن کو رات میں داخل کرتا ہے اور آفتاب وماہتاب کو اسی نے کام میں لگا دیا ہے۔ ہر ایک میعاد معین پر چل رہا ہے۔ یہی ہے الله تم سب کا پالنے والا اسی کی سلطنت ہے۔ جنہیں تم اس کے سوا پکار رہے ہو وہ تو کھجور کی گٹھلی کے چھلکے کے بھی مالک نہیں He merges the night into the day (i.e. the decrease in the hours of the night are added to the hours of the day), and He merges

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

the day into the night (i.e. the decrease in the hours of the day are added to the hours of the night). And He has subjected the sun and the moon, each runs its course for a term appointed. Such is Allah 🕬 🎽 your Lord; His is the kingdom. And those, whom you invoke or call upon instead of Him , own not even a Qitmir (the thin membrane over the datestone).

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>



<u>రాసినోళ్ళు::- BegBowlana MushtiFandey,ఖాదరుమీరాన్</u> <u>వీధి,చిత్తూరు,+HadapZakatyMajoosy,నాయకవీధి,వాయల</u>

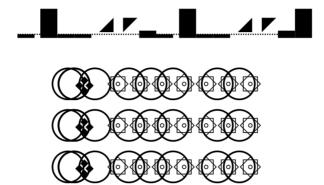
<u>పాడు,+నక్కలదిన్ని సునక</u>

<u>జాగిలం,బండమీదకమ్మపల్లి,Opp.#రాజకుమారీ అమృతకౌరు</u>

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

<mark>హోస్పీసియో,మదనపల్లి......పేజ</mark>ీ,:1

dtp by jiddujaHoolan Zaloomaaaaa with Technical help from ApPallaRajuSciondia,CCIE,



Quantum Physics.....The

<u>Devastating_ ...Shytaany_Satanic</u>

Effect.....in the ever expanding

universal Mass_

Nuetrons, Protons, and all Fringe particles are in constant motion ,collision cours€ ?/demotion affected effectively by selectvely

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

of various Greko-Rumaany-ZwendAwesthe
hues and colours entwined intricately in
Goongaa Jhoomnaa Tehzeeby Tamaddan and
of course a grand sense of belonging to a
particular Schismatic Marzy Roghany Rougey
_Buzrogy iconic,denomination of Dalleen
Sosey wollencoatsoofeee softwared
,Technolgized fabricated in the great Majoosy
lands of

Daariooos,jerkyXerxes,Mageaanmagillan
magicalmaggi fire of
PadreNamkeen-MaadreTalkh
_DukhtereTwofey_watan...AryaMohraZohraKo
hra,Dakaaraa,Pukaaraa,Baakaaraa,Bargandy
Kontiki_men_hellbent on spreading PURE
FASAAD in every nook and corner of the
Ertz,Ardh,Earth,.....with a lot of Nostalgic
Analgesic Pastbut certainly a bleak

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

Aatish_so they are going to land in their favvy
AAATISHY Abode _NAARU JAHANNAM...once
for all..That is the crux of their
Allamma_Ullemma_Matter_,
No matter what i blabber,Physical Matter
can neither be created nor destroyed_of
course it nay change from one to the other
state_Solid,Liquid,Gaseous ...Tridentic Triad
TeenTrishul Trayam Three...

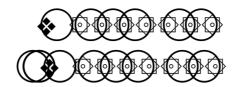
Eg.Water_ H²o 1_Normally Liquid...

2_Frost,Ice,at Low Temparature....

3_Gas,Vapour at High Temerature +++Atmospheric Pressure...Who created all these Qudraty Forces.....

Ans: Say Allaahu...The AlMighty...Khaliqu Kulli Shyin....

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>



Look at the Vomity Comity of Notions,Uno,
Demonocratic Venom Spewing west...Created an
Enormous human tragegdy in Palestine....even after
108 years Palestinian Muslims are suffering, More
than 1000000 homes ,Mosques,Villages,Town,Cities
of peaceful citizens have been BullDozed,,Lakhs of
Muslims have been killed,Millions transformed into
Refugees...killing and destruction of homes is the
State sponsored Tyrranical Policy of the Culturally

Vulturized blood thirsty ,Sadists since 108 years.....watching the inhuman Tragedies Gleefully on their Mediaare the gftl BananaLands....

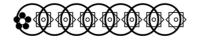
.....Baitul Maqdis....Aqsa may go the Babar way.....The demon of God disLoyal_Qaabid_Disrael is working overtime in destrution,killings,murders and mayhem...spreading Fasaad...through Mossaaad....of late .this State sponsored Terror

<mark>///...Al-Haji (</mark>22:78)

Technology is being exported to barre kabaaer....of course for a hefty Fee.

Al-Baqara (2:11)





<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>

,,,,,,,,,,,,,,,

.....YAA RABBI...

.....REMOVE FROM MY MIND

ALL THE BUZRUGY RIJZ -OUR TRADITIONAL CORRUPTED
SOFTWARE DEEPLY EMBEDDED IN MY PSYCHE SINCE
CHILDHOOD....ACTING AS AN INSURMOUNTABLE
LIFE-LONG IMPEDIMENT FOR MY HIGHER FACULTIES
,PREVENTING ME FROM CONFIGURING YOU AND YOUR
DEEN AL-ISLAAMU...

....AND MY QAREEN HAAJIZ SHYTAAN HAS ENTICED AND OVERPOWERED ME...RESULTANTLY MY DAMAAGH REJECTS THE QURAANIC SOFTWARE-BECAUSE MY BUZRUGY SOFTWARE HAS HARDENED INTO STEELY HARDENED HADEED.-

YOU ALONE CAN SAVE ME ----OTHERWISE I WILL

SURELY END UP AS ONE OF THE MANY KHAASIREEN...THE

ULTIMATE HATABU JAHANNAM

SAVE MY LOUSY SOUL-

AAMEEN YAA RABB_AL_AALAMEEN..

<u>///...Al-Hajj (22:78)</u>





<mark>///...Al-Hajj (22:78)</mark>

MILLION TO THE PARTY OF THE PAR